शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 19 | उदयपुर शनिवार 15 अक्टूबर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

‘मां’ में सकारात्मक आस्था हो तो नकारात्मक कुछ भी नहीं : मुनव्वर राणा

(प्रख्यात कवि-शायर मुनव्वर राणा से डॉ. महेन्द्र भानावत की बातचीत के मुख्य अंश)

मुनव्वर राणा एक ऐसा ख्यात नाम है जिसे मुशायरा और कवि सम्मेलन, दोनों में जबर्दस्त लोकप्रियता हासिल है और जिन्हें सुनने के लिए श्रोता दूर-दूर से बड़ी संख्या में आने को लालायित रहते हैं। सच तो यह है कि कविता के मंचों पर इनका नाम चलता है और आयोजकों की भी वाहवाही चलती है कि उन्होंने राणा जैसे शायर-कवि को आमंत्रित किया। सो राणा साहब उदयपुर में भी 28 सितम्बर को तशरीफ लाए। प्रयोजन था द टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन का।

डॉ. तुक्तक भी इस कवि सम्मेलन में टाइम्स के अल्पेश लोढ़ा के साथ आयोजक मुख्य था सो उसके साथ मैं होटल चला गया। यह सुबह का ही कोई 8 बजे का वक्त था। तुक्तक ने दो बार ठहर-ठहर कर घंटी बजाई पर कोई हलचल नहीं पाई। फिर भी कुछ देर खड़े रहे। जब लौटने को हुए तो अचानक राणा साहब वाकर के सहारे बाहर ही टहलते मिले। तुक्तक से परिचित थे सो उसके माध्यम से मेरे भी परिचित थे।

कमरा खोलते ही उन्होंने बड़े अदब से हमें सोफे पर बैठने का इशारा किया। वे कुछ थके लग रहे थे। दवाइयों का पुलंदा हाथ में लेकर एक गोली निकाली, निगली और पानी भीतर गले से पूरा भी नहीं उतरा कि उन्हें खांसी-दर-खांसी शुरू हो गई। हम भी परेशान हो गये। घबराते हुए भी उन्होंने हमें धैर्यमय इशारा दिया कि घबराने की कोई बात नहीं है। सबकुछ ठीक हो जायेगा। सो हुआ।

तुक्तक बोला- पापाजी, आपको अपनी कुछ पुस्तकें भेंट करना चाहते हैं सो सोफे पर ठीक रहेगा। वे सोफे पर आ गये। पुस्तकें पाकर वे अपने पलंग पर, मैं सोफे पर। बोले- आपने बड़ा काम किया है। एक नया क्षेत्र बनाया और उसे नई पहचान दी है। मैं आपकी इन पुस्तकों को अपनी लाइब्रेरी में सम्मानपूर्वक रखूंगा। मेरी लाइब्रेरी बहुत विशाल है। लखनऊ में जो चीजें प्रमुखतः दर्शनीय हैं उनमें मेरी लाइब्रेरी भी है। बड़े-बड़े स्कॉलर आते हैं और अच्छा लाभ लेते हैं।

हमारी बातचीत का सिलसिला चल पड़ा। पूछ बैठा- आपकी ख्याति अपनी कविता-शायरी में मां को लेकर सर्वाधिक है। सर्व साधारण से लेकर विशिष्ट जनों में आपने मां के महत्व से लेकर उसके प्रतापी रूप को जो आत्मीय यश दिया, वह बेमिशाल है पर मैं यह जानना चाहूंगा कि वह मां कौन है? कैसी है?

कुछ क्षण की चुप्पी के बाद बोले- वह जो सर्व व्यापक है, मां ही है, पुरूष नहीं। वह नहीं होती तो पुरूष कहां से आता। मैं बोला-जगत्जननी। बोले, हां। उस पर सबकी सकारात्मक आस्था हो तो कोई नकारात्मक होगा ही नहीं। बीमारी की बात चली तो राणा साहब बोले- बीमारियां लगी की लगी रहती हैं। अधिकतर घुटनों तथा कुछ अन्य बीमारियों के कारण 31 बार अस्पताल की शरण ले चुका हूं। इतनी बार तो मैं अपने ससुराल भी नहीं जा पाया हूं। चाहता हूं अब किसी अस्पताल की शरण लिए बिना सीधा ऊपर पहुंचूं।

मैंने पाया, इस कथन में भी उनके चेहरे पर कोई उदासी की रेखा नहीं है। सबकुछ सहज सरल और मस्त है। अपनी बात जारी रखते हुए बोले- मैं बचपन से ही राजस्थान के शौर्य से बड़ा प्रभावित रहा। प्रताप के संबंध में सुना, पढ़ा तो प्रेरणा मिली कि मैं भी उनकी तरह अपने साथ राणा का संबोधन बनूं सो मुनव्वर राणा लगाना शुरू किया और चल निकला। चल ही क्या निकला, राणा पहचान ही बन गई।

मैंने पूछा- सुना है कि आप अपने मन के बादशाह हैं। इस बादशाहत के रहते कभी-कभी जो वादा किया जाता है, उसे निभाना भूल जाते हैं। तपाक से बोले- सही है, मैंने कई जगह ऐसे कार्यक्रम छोड़े हैं। एक तो परिस्थितियां भी जब साथ नहीं देतीं तो ऐसा हो जाता है फिर कई घटनाएं भी मुझे ऐसा करने को बाध्य कर देती हैं पर मेरे लिए यह कोई नहीं कह सकता कि मैं किसी के पैसे खा गया। ऐसी शिकायत आपने भी नहीं सुनी होगी। सम्मानपूर्वक लोग बुलाते हैं और मेरे से मना ही नहीं होती।

एकबार एक व्यक्ति ने कवि सम्मेलन के लिए मुझे बुक किया। दूसरे दिन एक अन्य व्यक्ति ने मुझे 10 हजार ज्यादा देकर पास ही के गांव में बुक किया जो मुश्किल से 30 किलोमीटर की दूरी पर था। पहला कवि सम्मेलन बड़ा शानदार रहा। वहीं लोगों से सुना कि दूसरा जिसने बुक किया वह उसी का भाई है। दोनों के आपस में तकरार रहती है सो मूंछों की लड़ाई में, वदावदी में उसने भी मुझे बुक कर लिया। मैंने कई लोगों से जब यह सब सुना तो सोचा कि भाई-भाई आपस में लड़ें, यह भी ठीक नहीं पर उनकी तकरार का मोहरा मुझे बनाया गया, यह तो सर्वथा अनुचित है। सो लोगों की भावना का ख्याल भी मेरे मन में था । मैंने सोचा कि जब मेरे श्रोता मुझे सुनने 50 से 100 किलोमीटर दूर से आ सकते हैं तो केवल 30 किलोमीटर से क्यों नहीं आ सकते सो मैं वहां नहीं गया। मगर मैंने उसका एक भी पैसा अपने पास नहीं रखा। हम भ्रातृत्व तथा भाईचारा बढ़ानेवाले लोग हैं। एक मां के जब ऐसे लाल हों तो वहां मेरी मां की कविता लोगों को क्या सीख देगी?

मुझे लगा, बहुत हो गया। राणा सा. को अब आराम की आवश्यकता है सो हम उन्हें प्रणाम कर अपने पथ हो लिये।

‘उदयपुर मेरी कविता की जन्मभूमि’

(प्रख्यात श्रृंगारी कवि विष्णु सक्सेना से डॉ. भानावत की बातचीत)

28 सितम्बर को उदयपुर के विराट कवि सम्मेलन में भाग लेने आये विष्णु सक्सेना से भेंटकर जैसा मुझे अच्छा लगा वैसा ही उन्हें भी अच्छा लगा। होटल के कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने पहचान लिया और तपाक से बोले -‘ आप अब भी वैसे ही हैं जैसे 31 वर्ष पूर्व थे।’ मैंने तत्काल उसी क्रम को बिना तोड़े कहा-‘और आप?’ बोले- ‘हूं तो वैसा ही पर तब बच्चा था। सिकन्दराबाद से यहां आयुर्वेद कॉलेज में पढ़ने आया था। उस दौरान माधव दरक और कुछ मित्रों के साथ कवि सम्मेलनों में भाग लेना शुरू कर दिया था। दो-तीन कवि सम्मेलनों में तो आपके साथ काव्यपाठ करने का मौका भी मिला। उन्हीं दिनों जय राजस्थान के ‘चलते-चलते’ स्तंभ में मेरे पर आपने जो लिखा उसे मैंने स्थायी रूप से अपनी यादगार में सुरक्षित कर रखा है। सच तो यह है कि कविता करना मैंने यहीं प्रारंभ किया था। इस दृष्टि से उदयपुर मेरी कविता की जन्मभूमि है।’

मैं याद करता हूं, मैंने तब क्या लिखा होगा। पुराने रजिस्टर टटोलता हूं तो 17 फरवरी 1985 को लिखा वह लेख मिला। विष्णुजी ने जो बातें कीं उनमें से कुछ तो इसी में लिखी मिलीं। यथा- ‘‘पिछले माह रेलमगरा के अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में जाना हुआ। इसमें एक गीतकार विष्णु सक्सेना अच्छे लगे। कवि सम्मेलनों में गीतों की भागती, नदारद होती गायकी को जो बहुत कम लोग रख पा रहे हैं उनमें विष्णु भी उतने ही सक्षम और बुलंद हो सकते हैं। विष्णु सक्सेना के गीतों में मिठास, चुस्क चहक और उन्मुक्त उमंगों की बहार है जो आम आदमी की पीड़ा को समेटता चलता है-

मैं गम के बगीचे का एक सूखा दरख्त हूं
लिपटें न आप, न मुझसे,
अगर अमर बेल की तरह।
कल मैंने दिल की आग पर सेकी थी रोटियां
आंसू तमाम उम्र जले तेल की तरह।।

उनके गीतों में नया तेवर, नई रवानी और नई कशमकश है। सक्सेना के गजल-गीत बहु आयामी और बहुविध हैं। मुझे विश्वास है, आने वाला कल विष्णु सक्सेना का अपना फलक देगा और हम सब उन्हें गुनगुनायेंगे।’’

बीतचीत में विष्णु भाई ने ठीक ही कहा था कि तब जो कुछ लिखा, मैं उसी ट्रेक पर चल रहा हूं और आपने जो संभावना व्यक्त की थी वह भी मैं देख रहा हूं। उन्होंने बताया कि हमारे देश में कवियों का सर्वाधिक और सर्वोच्च सम्मान हमारे उत्तरप्रदेश में सपा ने किया है। सबसे बड़ा सम्मान 11 लाख का मुझे भी मिला। मैंने अपने माता-पिता के नाम से ट्रस्ट बनाया और उसके ब्याज से प्रतिवर्ष एक श्रेष्ठ युवा गीतकार को 11 हजार रूपये का पुरस्कार देकर सम्मानित करता हूं।

जब गीत सबसे अलग थलग पड़ एक कोने में डाल दिया गया था तब भी मैंने गीत को नहीं छोड़ा। मेरे मित्रों ने कहा भी था कि विष्णु हाथ में अंगारा लेकर चल रहा है। इसी शहर के पं. विश्वेश्वर शर्मा याद आ रहे हैं जिन्होंने मुझे सावधान कर कहा था- ‘‘क्यों तू अब तक गीत से चिपका हुआ है। मैं स्वयं गीत को एक तरफ कर पैरोडी में आ गया हूं। सभी हास्य सुना रहे हैं और तू शहद की मक्खी की तरह चिपका हुआ है।’’ मैंने कहा- ‘‘पंडितजी जाहे जलूं, चाहे मरुं पर गीत नहीं छोड़ूंगा।’’

मैं सवाल करता रहा विष्णु भाई जवाब देते रहे। बोले- सच तो यह भी है कि गीतकारों ने ही गीत का संरक्षण नहीं किया इसलिए भी गीत पीछे चला गया। जिस सरस्वती ने जो विद्या-विधा दी, हमने उसको भी शुद्ध सलामत नहीं रखा बल्कि उसके साथ भी दुराचार ही किया। मैंने किसी कवयित्री को तैयार नहीं किया और न किसी डाक टिकिट या फिर सिक्के की तरह जारी किया। मैंने सदैव यह महसूस किया कि सरस्वती ने जो पावन चीज दी है उस श्रेष्ठत्व को देकर बुरी चीज क्यों ग्रहण करुं। यह व्यापार तो घाटे का ही है। जैसा कि आपने सुना और मैंने भी सुना, किसी कवि ने किसी कवयित्री को कवि सम्मेलनी चलन का बनाया, एवज में उस कवि-कवयित्री को मिला क्या। अच्छी पैठ सदैव अच्छी छवि से बनती है।

आज के कविसम्मेलनों का दौर चुटकलेबाजी तथा फुहड़पन और सतही हंसीठट्ठा तक पहुंच गया है। अब कवि कविता कम सुना रहे हैं। मूल रचनाकार 10 हजार तथा चुटकलेबाज 40 हजार तक पहुंच गया है। उसकी खातिरदारी एयरपोर्ट से ही शुरू हो जाती है। इसमें उस कवि से अधिक आयोजक तथा संयोजक का दोष है। वे ‘जनता ऐसा ही चाहती है’ कहकर अपना बिजनेस ही अधिक बढ़ा रहे हैं और यों भी अब कविसम्मेलनों में भी ठेकेदारी प्रथा शुरू हो गई है। ‘देओ और लेओ’ का सिलसिला शुरू हो गया है पर तब भी जो मूल्यवान है वही बचा रहेगा।

ऐसे कवि भी हैं जो पिछले 50-60 वर्षों से जैसे पहले थे वैसे ही निखार पाये हुए हैं। उनका वैसा ही अंदाजेबयां सबको आकर्षित भी करता है पर उनकी संख्या बहुत अल्प है। यों कोई क्या करे जब जमाना ही अगदड़ भगदड़ भाग धड़ाधड़ का हो। बचना तो रचनाकार को ही होगा। मैं विष्णु भाई की लिखी वे पंक्तियां दोहराता हूं जो जीवन को विविध कोणों से बोधपरक बनाती हैं और कुटिल मार्ग पर जाने से रोकती हैं। इन्हें वे खुद भी लाइक करते हैं और उनकी फरमाइश भी हर समय होती रहती है-

रेत पर नाम लिखने से क्या फायदा
एक आई लहर कुछ बचेगा नहीं।
तुमने पत्थर का दिल हमको कह तो दिया
पत्थरों पर लिखोगे, मिटेगा नहीं।।

स्मृतियों के शिखर (18) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मानव-मसीहा महामानव तुलसी

महाप्रज्ञजी से मेरी पहली भेंट सन् 1962 में आचार्य तुलसी ने कराई जब उदयपुर में उनका चातुर्मास था। पहली बार में ही उनके स्नेहशील अपनत्व और आत्मीयता के कारण मैं सदैव के लिए उनसे बंध गया। मेरा क्षेत्र लोककला, लोकसंस्कृति एवं लोकसाहित्य का था। अत: उन्होंने मेरा तेरापंथ के उन साधु-साध्वियों से परिचय कराया जो साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में बहुप्रसिद्ध एवं साधनारत थे। मैंने उन पर 'धर्मयुग' से लेकर 'अणुव्रत' तक की पत्र-पत्रिकाओं में लिखा। शोध-पत्रिकाओं में भी लिखा।

उन्हीं दिनों दैनिक हिन्दुस्तान में 'व्यक्ति, साहित्य एवं समस्याएं' नामक एक लोकप्रिय स्तंभ चलता था। मैंने उन दिनों देवीलाल सामर, नरोत्तमदास स्वामी, अगरचंद नाहटा, मोतीलाल मेनारिया, गोवर्धन बाबा आदि पर उसमें लिखा। इस स्तंभ के लिए मैंने महाप्रज्ञजी पर भी लिखा। तब वे मुनि नथमल के नाम से जाने जाते थे। आचार्य तुलसी ने 'मेरा जीवन मेरा दर्शन' नामक आत्मकथा में मेरी भेंट का जिक्र करते हुए लिखा- ''महेन्द्र भानावत मूलत: कानोड़ निवासी है और तेरापंथी श्रावक है। उसकी माता गहरी धर्मनिष्ठा रखनेवाली भक्त श्राविका थीं। कार्यक्षेत्र बदल जाने से महेन्द्र आदि भाइयों का सम्पर्क कुछ कम हो गया है। महेन्द्र एम.ए करने के बाद उस समय डाक्टरेट कर रहा था। लेखन के क्षेत्र में भी उसने अच्छा विकास कर लिया। उसने हिन्दुस्तान पत्र के लिए मुनि नथमलजी के बारे में एक लेख लिखा। लेख मुझे दिखाया, अच्छा लगा।'' (आत्मकथा भाग- 5, 21 अगस्त 1962, पृष्ठ- 166)

मुनि नथमलजी तब मुखर्जी चौक स्थित पगारियाजी के निवास पर ठहरे हुए थे। यहां मैं उस चातुर्मास काल के दौरान कई बार उनके दर्शन करने पहुंच जाया करता। मुनिश्री ने मुझे तेरापंथ धर्मसंघ के जिन विशिष्ट साधु-साध्वियों से भेंट कराई उनमें से कुछ अति सूक्ष्म लिपि के धनी थे। कुछ जैन दर्शन संबंधी 'जैसा कर्म वैसा फल' जैसे परिणाम को दर्शाते, स्वर्ग-नर्क के सुख-दुख भोगते बड़े ही कलात्मक चित्रों के चितेरा थे। उनकी चित्रशैली सर्वथा वैशिष्ट्य लिए थी जो तेरापंथ सम्प्रदाय की शैली ही बनी हुई थी। उन साध्वियों से भी भेंट कराई जो बहुत अच्छी काव्य रचना करती थीं। कुछ साध्वियां गद्यगीत लिखने में कुशाग्र थीं।

यहां नमूनार्थ 'धर्मयुग' में प्रकाशित वह आलेख दिया जा रहा है जो 'तेरापंथी साधुओं के आधुनिक जैनचित्र' शीर्षक से सचित्र प्रकाशित हुआ-

''चित्र, लिपि, पातरा, टोक्सी, सिलाई तथा बुनाई आदि की दृष्टि से तेरापंथी साधुओं की अपनी विशेष परंपरा, कला तथा शैली रही है। आचार्य भिक्षु से लेकर वर्तमान आचार्य तुलसी तक लगभग ढाई सौ वर्षों से चली आ रही इस लम्बी परिपाटी की अपनी कई विशेषताएं एवं विविधताएं हैं।

सुंदर तथा सूक्ष्म लिपि के रूप में एक पन्ने में लगभग 80 हजार अक्षरों की स्पष्ट लिखावट देखकर सहसा यह विश्वास नहीं होता कि कलम की सहायता से इतनी बारीक लिपि हो सकती है, जिन्हें सौ-सौ आंखें भी आसानी से नहीं पढ़ पाती हैं। काष्ठ के बने रंगबिरंगी पातरों तथा काचली की बनी टोक्सियों पर अत्यंत महीन कलम की फूल, पत्तियां, बेल-बूटे तथा प्राकृतिक दृश्यों की छटा देखते ही बनती है। सिलाई तथा बुनाई की दृष्टि से साध्वियों की कला अद्वितीय कही जा सकती है।

चित्रों में दृष्टांत, बुद्धि परीक्षा, शिक्षा, उपदेश तथा नरक जीवन से संबंधित चित्रों के कई रंग रूप प्रकार देखने को मिलते हैं। मुख्यत: जैसा कर्म वैसा फल, आपसी कलह का फल, मिलावट का फल, व्यभिचारिणी स्त्री को शूली, अधिक शिकार का फल, नर्क जीवन में जीवों की स्थिति, जीव ही जीव का भोजन है (जीवो जीवस्य भोजनम्) का दरसाव देते चित्र अधिक आकर्षक एवं लोकप्रियता की पहुंच लिए हैं। नरक जीवन के चित्रों में मुख्यतया इस लोक में किए गए पाप, अन्याय, अत्याचार, छल, कपट, चोरी, कलह तथा अनैतिकता आदि के परिणामस्वरूप परलोक में जो यातनाएं,, कष्ट एवं दुख सहने पड़ते हैं, उनके दृश्य चित्रित किए जाते हैं। इन्हें दिखाकर भक्तजनों को बुरे, निम्न तथा घृणित कार्यों से छुटकारा पाकर सद्कार्य करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।

वर्तमान में मुनि दुलीचंदजी, सागरमलजी 'श्रमण' तथा सोहनलालजी एवं साध्वी सूरजकंवरजी, जतनकंवरजी तथा कमलूजी श्रेष्ठ चित्रकार हैं। जयाचार्य (चतुर्थ आचार्य) के पूर्व केवल साधुओं में ही चित्र बनाने की परिपाटी थी परन्तु आगे जाकर साध्वियों ने भी इस कला में कमाल दिखाया। लाडनूं में, जहां इनका स्थविरवास है, गत दो सौ वर्षों की चित्रकला के कई श्रेष्ठ नमूने देखे जा सकते हैं।''

यही नहीं, धर्मस्थानों में पाप-पुण्यजनित जो चित्राम मिलते हैं उनमें सांप-सीढ़ी के खेल नाम से कई पुराने कपड़े पर चित्रित, मोटे कागज पर चित्रित तथा छपे चित्र-पाठे देखे। मुझे एक पुराना कपड़े पर चित्रित चित्राम मिल गया था। इस पर भी मैंने 'धर्मयुग' में लिखा जिसका 18 जुलाई 1965 को प्रकाशन हुआ जो इस प्रकार था-

सांप-सीढ़ी का खेल :

''राजस्थान जहां एक ओर विविध रंग रूपों की अत्यंत रंगीन और गुलाबी भूमि रही है, वहां दूसरी ओर नानाप्रकार के खेलों का भी भरापूरा खजाना रहा है। यहां के बालक-बालिकाओं, जवानों, बूढ़ों तथा महिलाओं में कई प्रकार के सुंदर खेल खेलने की परंपरा रही है। ये सारे खेल समूह, मंडली, दो दलों अथवा दो व्यक्तियों के बीच खेले जाते हैं। दिन के खेल अलग होते हैं तथा रात्रि के अलग। रात्रि के खेलों में चांदनी रात तथा अंधेरी रात के भी अलग-अलग खेल देखने को मिलते हैं। ये खेल केवल खेल ही नहीं, अपितु हमारी ज्ञान-शक्ति, बुद्धि-परीक्षा तथा पवित्र जीवन जीने के भी पूर्ण परिचायक होते हैं।

सांप-सीढ़ी के खेल में 8 ङ्ग 9 के रूप में कुल 72 खाने अथवा खंड होते हैं। इन खंडों के अलग-अलग नाम दिये होते हैं जिनमें सांप तथा सीढ़ियों का जाल सा बिछा रहता है। इन्हें पार कर ही गोलोक, शिवलोक, बैकुण्ठ तथा ब्रह्मलोक में पहुंचा जाता है। हमारा जीवन भी नाना मार्गों, उपमार्गों से गुजरता है। कहीं फूलों का सुखमय राजमार्ग मिलता है तो कहीं शूलों की दुखमय भूलभुलैया। जैसा कर्म हम करते हैं, वैसा ही फल हमें प्राप्त होता है। हमारे सुकर्म हमें आगे बढ़ाने में सहायता करते हैं और हमारे दुष्कर्म हमें पीछे की ओर धकेलते रहते हैं तथा पग-पग पर परेशानियां पैदा करते हैं। संक्षेप में इस खेल की यही शिक्षा, संदेश और सीख है।

सीढ़ियों के द्वारा जहां एक ओर तपस्या, दयाभाव, परमार्थ, धर्म, उदारता, गंगास्नान, सत्कर्म, देवपूजा, शिव तथा माता-पिता-भक्ति, ध्यान-समाधि, गोदान तथा हरिभक्ति आदि के खानों से चन्द्रलोक, सूर्यलोक, अमरापुर, तप, धर्म, ब्रह्म, शिव, गौ, इन्द्र, स्वर्ग तथा धर्म लोक के साथ-साथ बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है, वहां दूसरी ओर झूठ, चोरी तथा बाल हत्या, परनारी गमन, विश्वासघात, मिथ्या वचन, गो-हत्या, ईर्ष्या, अधर्म आदि बुरे कर्मों के सर्प काटने से रौरव नर्क, कुम्भीपाक नर्क आदि में पड़कर जघन्य कष्ट सहने पड़ते हैं। 'गोटी' पर लिखे अंकों के अनुरूप 'कंकरियां' इन खंडों को पार करती, सीढ़ी चढ़ती और पुन: सांप के काटने से नीचे की ओर फिसल पड़ती हैं। ठीक यही क्रम हमारे जीवन का भी है, जिसमें नाना उतार-चढ़ाव, ऊहा-पोह आते रहते हैं।

सांप-सीढ़ी के इस खेल के माध्यम से हमारे जन्म-मरण तथा जीवन-जंजाल के सारे सिद्धांतों का मूल बिंदु हाथ लग जाता है। आज के युग में जहां लोगों का पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, स्वर्ग-नर्क तथा लोक-परलोक से विश्वास उठता जा रहा है, इस खेल की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है।''

बाद में जब मैंने आचार्यश्री के दर्शन किये तो उस लेख का जिक्र करते उन्होंने कहा कि अच्छे पत्रों में लेखन का प्रभाव बड़ा दूरगामी असर करता है। तुम्हारे हाथ में अच्छी कलम है। इसका अधिकाधिक धर्ममय उपयोग करोगे तो समाज अच्छा बनेगा। हमें तो खुशी है कि अपने लेखन द्वारा तुम हमारे ही उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक बन रहे हो।

मुझे कतई यह कल्पना नहीं थी कि कभी धर्मयुग में लिखे इस आलेख को पढ़कर कोई उसे अपनी पीएच.डी. का विषय बनायेगा और वह भी विदेशी। डेनमार्क से जेकब स्मीट मडसेन 5 दिसंबर 2013 को मिलने आए। मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि वे कोपनहेगन विश्वविद्यालय से सांप-सीढ़ी पर पीएच.डी. के लिए शोधकार्य कर रहे हैं। मेरे से भेंटकर उन्होंने मुख्यत: दो उपलब्धियां प्राप्त कीं। एक तो उन्होंने धर्मयुग का वह 18 जुलाई 1965 का अंक देख लिया जिसमें मेरा सचित्र लेख छपा था। यह अंक अनेक जगह भटकने पर भी उन्हें कहीं देखने को नहीं मिला। दूसरा प्रसंग इससे भी महत्वपूर्ण उन्होंने मेरे से भेंट करने का माना जिसकी उम्मीद उन्हें बहुत कम थी।

भारत के विभिन्न प्रांतों मुख्यत: राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में भ्रमण कर उन्होंने सांप-सीढ़ी खेल के श्वेत-श्याम तथा रंगीन पाठे प्राप्त किए हैं जो 50 से अधिक हैं। सभी में अलग-अलग खंड-खाने बने हैं। संख्यावाचक इन खानों-खंडों में गोटी में आई संख्या के अनुसार अपनी पहचान की कंकरी उन खंडों को स्पर्श करती है। जिस खंड में सर्प-मुंह होता है उसमें आते ही खिलाड़ी की कंकरी उस सर्प के सहारे ठेठ अंत तक के खाने में पहुंचानी पड़ती है जहां उसकी पूंछ समाप्त होती है। यह उस कंकरी की पतनावस्था कहलाती है और ठीक इसके विपरीत सीढ़ी का सिरा जिस खंड से प्रारंभ होता है उसके सहारे उस सीढ़ी के ऊपरी सिरे वाले खंड तक कंकरी का चढ़ाव होता है जो उसकी उत्कर्षावस्था होती है।

सांप-सीढ़ी का खेल कहीं ज्ञान चौपड़, कहीं ज्ञानबाजी तो कहीं मोक्षपट के नाम से भी जाना जाता है। जेकब को प्राप्त राजस्थानी, हिन्दी, गुजराती और संस्कृत के खेल-पाठे मैंने देखे। उसमें एक अरबी लिपि का भी था। इससे इस खेल की व्यापक लोकप्रियता का दिग्दर्शन होता है। मुख्यत: इसका लक्ष्य धर्म-अध्यात्मपरक कर्म-फल का दरसाव ही है। अच्छे कर्म करने से अच्छा फल और बुरे कर्म करने का नतीजा बुरा होता है। ये पाठे सौ खंड तक के होते हैं।

मेरा चित्र-फलक कपड़े पर चित्रित है। ऐसे कपड़े पर चित्रित फलक पट्ट कहलाते हैं। राजस्थान में यह पट्ट कला पड़ कला के नाम से जानी जाती है जिसमें सर्वाधिक प्रसिद्धि पाबूजी की पड़ को मिली। अब तो ये पड़ें विदेशी संग्रहालयों तक की शोभा बनी हुई हैं। सबसे पहले इन पर लिखने का सौभाग्य भी मुझे ही मिला और विदेशी स्कॉलर जो मिलर तथा स्मिथ को राजस्थान की यात्राएं करा पड़-कला-संस्कृति का अध्ययन भी कराया।

सांप-सीढ़ी के मेरे चित्रपट में ऊपर ही ऊपर गऊलोक, शिवलोक, बैकुंठलोक भरमलोक के सचित्र खाने हैं। अन्य लोकों के खाने जस, इन्द्र, सूरज, धर्म,तप, जप, चन्द्र, भय, नाग, गंधर्व, स्वर्ग, नर्क तथा राजलोक हैं। ऐसे ही देवों में अरण्य, अच्युत, आनल, सहस्त्रा, शुक्र, सनत, प्राण नामक देवों के खाने हैं। इनमें बहुत कम के संबंध में जानकारी मिलती है। जेकब ने बताया कि सबसे प्राचीन सन् 1735 का पाठा उन्हें जयपुर से उपलब्ध हुआ किंतु मेरे पास संगृहीत पट्टदार पाठा उन्हें कई दृष्टियों से अधिक महत्वपूर्ण लगा।

इन खानों तथा इनसे संबंधित धारणाओं और लोकव्यापी अवधारणाओं पर यदि अध्ययन किया जाय तो बहुत सी बातें जानने को मिल सकती हैं जो अब तक अज्ञात रही हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वाषिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधानक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

'खुशी' कार्यक्रम का शुभारंभ

हिन्दुस्तान जिंक ने उदयपुर तथा गिर्वा एवं झाड़ोल की 575 आंगनवाड़ी केन्द्रों को सुदृढ़ बनाने के लिये 'खुशी' कार्यक्रम की शुरूआत की है। इसके अंतर्गत झाड़ोल प्रखंड के आंगनवाड़ी केन्द्र के बच्चों को सुव्यवस्थित भवन मिल जाने से उनमें खुशी है। बच्चों को नियोजित माहौल में शिक्षा के साथ ही पोषाहार और स्वास्थ्य का लाभ भी मिलने लगा है। वर्ष 2005 से अमीवाड़ा आंगनवाड़ी केन्द्र उपस्वास्थ्य केन्द्र के छोटे से कमरे में संचालित हो रहा था। उल्लेखनीय है कि जिंक ने राजस्थान सरकार से 3055 आंगनवाड़ियों को सुदृढ़ बनाने व 6 वर्ष से कम की आयु के बच्चों को सुपोषण, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाएं देने का जिम्मा लिया गया था।

पहली दीवाली का ससुराल

-डॉ. तुक्त क भानावत

विवाह के बाद वर जब वधू को पहलीबार दीपावली पर लेने जाता है तब जो विधिविधान, उत्सवपरक आयोजन किया जाता है उसे मुकलावा, गौना अथवा आणा कहते हैं। इसके लिए संस्कृत में द्विरागमन शब्द प्रचलित है। वर को कुछ दिन तक ससुराल में ठहराया जाकर प्रतिदिन सुबह-शाम विशिष्ट मिष्ठान्न युक्त भोजन कराया जाता है और इस वक्त पास पड़ौस की महिलाओं द्वारा नाना प्रकार के मनोरंजक गीत गाये जाते हैं।

ससुराल में जंवाई को बड़े कठिन किन्तु मनोरंजक दौर से गुजरना पड़ता है। हर तरह से उसकी बुद्धि परीक्षा ली जाती है। परीक्षा लेनेवालियों में मुख्यत: उसके साले की पत्नी सालाहेली, सालियां, पत्नी की सहेलियां तथा पास पड़ौस की सम वयस्क युवतियां होती हैं। भोजन के समय हंसीठट्ठे का दौर अधिक आनंदित करने वाला होता है। जंवाई जब भोजन करने को होता है तब उसका ग्रास बांध दिया जाता है। यह बांधना सवाल-जवाब के रूप में, काव्यमय पहेली, पारसी के रूप में या फिर बतकही के रूप में होता है जिसका उत्तर देने पर ही जंवाई भोजन कर पाता है। यथा-

मैदा को सीरो कर्‌यो, पूड़ी तली पचास।
बांधूं थांको घूम घाघरौ, छोड़ो म्हांको ग्रास।।

ऐसे ही पानी पीते वक्त बांध दिया जाता है-

कोरो करवो कंकू वरणो, रात रह्‌यो रोड़ी में निरणो।
चाब्यो पान उगाली घाणी, म्हां बांध्यो मरदां को पाणी।।

जंवाई लाचार हो बांधन छुड़ाता कहता है-

बैठ रूंख पर मैना बोले, डोलत डाल पिछाणी।
सालीजी को हर्‌यो ओढ़णो, छूट्‌यो म्हांको पाणी।।

भोजनोपरांत जंवाई को एक कमरे में सभी घेर लेती हैं और पहले गादी फिर तकिया की मांग करती हैं। जंवाई उसे छुड़ा देता है तब ढोलिया बांध दिया जाता है और छोटे-छोटे सवाल शुरू हो जाते हैं। जंवाई को हर सवाल का सोच समझकर बड़े धैर्य के साथ टू द पोइन्ट उत्तर देना होता है। इस प्रकार-

सवाल - कुंवर सा., आप पधार्‌या तो कुण-कुण आपने पोंचावा आया?
जवाब - म्हारा भाई अर भांण अर्थात् भाई-बहिन
सवाल - थें बैठो तो जमीं माथै कई टिकै ?
जवाब - म्हारी निजर्‌यां
सवाल - थांकी धोती में कांई ?
जवाब - लांग

जंवाई के सही उत्तर देते-देते जब सालाहेलियां निरुत्तर रह गई तो दो-एक सवाल जंवाईजी ने दाग दिये पर वे भी कमतर बुद्धि की नहीं थी। उनसे भी सवाये जवाब दे बैठीं-

सवाल - आपरी कांचली में कांई ?
जवाब - टूंक्यां
सवाल - आपरे घाघरा में कांई ?
जवाब - नाड़ो
सवाल - थांके ओढ़णे में कांई ?
जवाब - म्हांकी नजर्‌यां
सवाल - थां किणसूं राजी रैवो ?
जवाब - काजल टीलड़ी सूं

इसके बाद पारसी पहली पूछने का दौर शुरू होता है। ये सुनने में अश्लील होती हैं मगर इनका गूढ़ अर्थ वैसा नहीं होता। जैसे-

नीचे फौड़ी ऊंचे फौड़ी फोड़मफोम मचाई है।
घर का धण्या सूं फूटी नाहीं तो पईसा दैर फुड़ाई है।

इसका अर्थ होता है- घट्टी, चक्की।

दूसरी पहेली देखिये-

पैल सखी उठ बोली यूं, दोन्यूं फाड़ बराबर क्यूं ?
दूज सखी उठ बोली यूं, काला केस किनारे क्यूं ?
तीज सखी उठ बोली यूं, कालो मणको बीच में क्यूं ?
चौथ सखी उठ बोली यूं, चोट लगे तो टपके क्यूं ?

इसका गूढ़ अर्थ है आंख।

हिन्दी साहित्य में मुकरियां बहुत प्रसिद्ध हैं। लोकजीवन में भी ऐसी मुकरियों के ठाठ कम नहीं हैं। लीजिए सुनिये-

जब म्हूं ऊपर बैठूं जाय, ढीली करै हिलाय-हिलाय।
लगै मचकड़ा ऊंलाडूंला, क्यूं सखी साजन? ना सखी झूला।

ऐसे करते-करते अर्धरात्रि हो जाती है तब स्त्रियां जंवाई को शयनगृह में ले जाती हैं और तब उसकी ब्याहीता को भीतर धकेल किंवाड़ बंद कर देती हैं फिर किंवाड़ की दराज अथवा छेद-कणकोले से झांकने का प्रयत्न करती हैं। होशियार वधू भीतर भी पहेली बुझौवल करती है। सवाल-जवाब चलते रहते हैं। ऐसा रंग माहौल जंवाई जब तक ससुराल रहता है, चलता रहता है।

विश्व आर्थराइटिस दिवस पर 'वॉकाथोन' आयोजित

उदयपुर। सुधा आर्थोपेडिक एण्ड गायनिक हॉस्पिटल एवं महाराणा प्रताप वरिष्ठ नागरिक संस्थान द्वारा बुधवार को विश्व आर्थराइटिस दिवस पर 'वॉकाथोन' (पैदल दौड़ स्पर्धा) का आयोजन किया गया जिसमें 40 से अधिक उम्र के 400 लोगों ने हिस्सा लिया। पैदल दौड़ को जाने माने जोइन्ट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ मनीष अग्रवाल, फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. विकास नलवाया, गायनोकोलोजिस्ट डॉ. मानसी अग्रवाल, सुधा हॉस्पिटल के निदेशक मदनलाल अग्रवाल, महाराणा प्रताप वरिष्ठ नागरिक संस्थान के महासचिव भंवर सेठ, संरक्षक फतहलाल नागोरी तथा अध्यक्ष चौसरलाल कच्छारा ने सुखाड़िया समाधी से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। दौड़ अशोकनगर मेनरोड़ होते हुए विज्ञान समिति पहुंची।

विज्ञान समिति में आयोजित समारोह में डॉ मनीष ने आर्थराइटिस के बारे में वरिष्ठजनों को जानकारी देते हुए बताया कि हमारे देश में घुटनों का आर्थराइटिस अधिक पाया जाता है। करीब 16 से 20 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी प्रकार से आर्थराइटिस से प्रभावित हैं। घुटनों की तकलीफ के सबसे महत्वपूर्ण कारण अधिक वजन उठाना, खराब जीवनशैली व्यतीत करना, व्यायाम नहीं करना, केल्शियम व विटामिन डी की कमी व हेरीडीटी होते हैं। इनकी वजह से घुटने खराब होने लगते हैं। पहले यह तकलीफ 50-60 की उम्र से शुरू होती थी, लेकिन पिछले 10-15 सालों में यह समस्या 30-50 की उम्र में शुरू होने लग गयी है जो चिंता का विषय है।

डॉ. अग्रवाल ने बताया कि विश्व आर्थराइटिस दिवस का उद्धेश्य लोगों को इस बीमारी के बारे में जागरूक करने व इसके बचाव के लिए ब्रिस्क वॉकिंग को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने इसके लिए किए जाने वाले जोड़ प्रत्यारोपण के ऑपरेशन, उसमें होने वाली आधुनिक तकनीकों की जानकारी देते हुए लोगों के सवालों के जवाब दिये। कार्यक्रम में डॉ मनीष द्वारा ऑपरेशन किए गए कुछ मरीजों ने भाग लेकर अपने अनुभव साझा किए। डॉ मनीष ने उनका सम्मान किया। फिजियोथेरेपिस्ट डॉ विकास नलवाया ने घुटनों के व्यायाम की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन भंवर सेठ ने किया।

रणजीत की पांच कविताएं

एक दिन

मैं अपनी जान दे दूंगा एक दिन
तुम्हारी इस गौर-सारंगी देह पर
तुम्हारे इस निस्पृह निश्छल नेह पर
सिर टिका दूंगा एक दिन
उसे बजाते-बजाते ही
और विलीन हो जाऊंगा
उसी के अनहद नाद में।
मैं न्यौछावर हो जाऊंगा एक दिन
तुम्हारे इस जास्मीन की
पंखुरियों जैसे जिस्म पर
तुम्हारी आंखों की गहराई में से
झांकते हुए सृष्टि के
रहस्यमय तिलिस्म पर।

तीस साल

यार तीस साल गुजर गये
तुम्हें प्यार करते हुए
और पता ही न चला,
इतने सालों में तो मुझे
थक जाना चाहिये था
छक जाना चाहिये था,
पक जाना चाहिये था
और यहां तक कि
चुपचाप कहीं पर
टपक जाना चाहिये था।
तीस साल !
भई गजब है
तीस साल तो अगर लगा रहता
तो एक पहाड़ खोद सकता था
काम करता किसी प्रयोगशाला में तो
कोई बड़ा सिद्धांत,
कोई नया तत्व शोध सकता था
तीस साल निरन्तर
किसी से प्यार करते रहना !
तुम्हें कैसा लगता है ?
सच-सच कहना !

एक निष्कर्ष

मीरा नहीं हो तुम
न मैं ही हूं तुम्हारा गिरधर लीलाधाम
तुम्हारे ओठ छूकर भी
जमाने का जहर अमृत नहीं होता
न मेरे चाहने भर से ही बनता है
तुम्हारी ओर बढ़ता सांप, शालिग्राम।
इसलिए तुम जहर का प्याला उठा कर
आज राणा के ही होठों से
लगाने के लिए
जी कड़ा करलो
और मैं ?
मैं अभी इस सांप का
सिर कुचलता हूं।

कल मैंने

कल मैंने एक रिश्वतखोर
कर्मचारी के हाथ में
थमाते हुए पचास का नोट
उसे ईमानदार घोषित किया।
कल मैंने एक अद्धे पर अपना
ईमान बेचने वाले
बड़ी-बड़ी आंखों वाले एक
थुलथुल पियक्कड़ बनिये को
कुशल प्रशासक कहा।
कल मैंने एक उच्च पदस्थ मंगते को
औढ़रदानी का खिताब दिया
और रचनात्मक राजनेता
कहकर पुकारा।
एक दलबदलू दलाल को
कल मैंने एक बौने बदसूरत
बेहया आंखों वाले
बलात्कारी बाप को कहा भद्रपुरुष।
कल रात मेरी आत्मा ने
मुझे इस कदर कचोटा
कि मैं तकिये में
मुंह छिपा फूट-फूट कर रोया।
कल रात मुझे ऐसा लगा
जैसे किसी गंवार पुलिस वाले ने
मेरा गिरेबान पकड़ कर
अकारण मुझे लातों घूंसों से
बुरी तरह पीटा हो
आज मेरा तन मन
उसी अदृश्य मार से टूटा हुआ है।

भूकम्प

तेजी से बढ़ रहा समय है
और कलेण्डर पिछड़ रहे हैं
काफी आगे निकल गया है
जल्दी-जल्दी कदम उठाने
वाला नया बसंत
और अब पीछे-पीछे हांफ रही है
भारी कदम वसंत पंचमी।
आंक नहीं पाता यह
तारीखों-माहों-बरसों का ढांचा
समय चाल को ठीक-ठीक से
सोमवार को अभी कलेण्डर
सत्रह ही तारीख बताता
लेकिन वह अट्‌ठारह, बीस, तीस
तक पहुंच रही है!
ऊपर से ज्यों का त्यों दिखता
अण्डे का यह खोल
कि जिसके भीतर का वह
जीवन अंकुर अपनी गति में
खोल की सारी जड़ सीमाएं
पीछे छोड़ चुका है!
और खोल जो अब तक
उसका कवच था
अब जंजीर बन गया।
लेकिन देख रहे जो केवल
मात्र खोल की मजबूती को
और नहीं जो बूझ रहे हैं उसके भीतर
उगती एक नई ताकत को
जिस दिन वह टूटेगा
बहुत चौंक जायेंगे
घबरा कर पूछेंगे
एकाएक अचानक यह
भूकम्प कहां से आया?

सर्जरी ऑफ वेरीकोज वेन्स पर लाइव वर्कशॉप

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल में सर्जरी ऑफ वेरीकोज वेन्स पर एक दिवसीय लाइव सर्जिकल वर्कशॉप का उद्घाटन वाइस चॉसलर डॉ. डी.पी.अग्रवाल, अहमदाबाद के बेस्कूलर सर्जन डॉ. श्रुजल शाह, पीएमसीएच के प्रिसिंपल एवं नियत्रंक डॉ. एस एस सुराणा तथा सर्जरी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. के.सी. व्यास ने किया। इस अवसर पर डॉ. शाह ने कहा कि वेरीकोज वेन्स की बीमारी ज्यादा खड़े रहने वाले व्यवसायी को होती है। इनमें पुलिसकर्मी, चाय का ठेला लगाने वाले, हेयर कटिंग करने वाले होते हैं। समय रहते इसका इलाज नहीं कराया जाय तो पांवों मे नसों का फूलना, सूजन आना एवं नहीं भरने वाला घाव या खून का रिसाव शुरू हो जाता है जिसे वीनस अल्सर कहते हैं। कार्यशाला निदेशक डॉ. के.सी. व्यास ने कार्यशाला में रेडियोफ्रीक्वेंसी पद्धति से वेरीकोज वेन्स के ऑपरेशन के बारे में जानकारी दी और कहा कि मरीज को बिना बेहोश किए ऑपरेशन संभव है। दो घण्टे बाद मरीज अपने घर जा सकता है और अगले दिन से ही अपने नियमित कार्य कर सकता है। कार्यशाला में संभाग के 60 से ज्यादा शल्य चिकित्सकों ने भाग लिया। डॉ. श्रुजल शाह ने लाइव डेमोस्ट्रेशन दिया।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 अक्टूबर 2016

सम्पादकीय

रावण के बढ़ते कद

रामायण काल से लेकर आज तक ठंडे-मीठे-ठंडे-मीठे रावण के कद बढ़ते जा रहे हैं जबकि उतने ही जोर-शोर से हम उसके कदों का पर्दाफाश करने, उसका जड़ मूल से खात्मा करने का यत्न भी करते रहे हैं। यह एक ऐसी फसल है जिसे बिना बोये ही बढ़ते रहने का जैसे शाप मिला हुआ है। खेती में खरपतवार का भी यही हश्र है।

गत दशकों में तो कई रूपों में रावण के कद हमारी परेशानियों के सबब बनते आ रहे हैं। राम तो एक ही है पर रावण अनेक रूपों में हमारे जीवन को, मानवीयता के सदर मूल्यों को लीलता जा रहा है। यह समस्या हमारे देश में ही नहीं, सब ओर पूरे विश्व में व्याप्त हो गई है। अपने घर में गंदगी, अत्याचार, अनाचार, भ्रूण हत्या, बाल विवाह, अशिक्षा मांदगी, पिछड़ापन, मिलावट, नशापता, भ्रष्टाचार, यौन उत्पीड़न जैसी समस्याएं रावणी रूप में कहीं मच्छर, कहीं डेंगू तो कहीं चिकनगुनिया की तरह परिव्याप्त है। इन सबमें आतंकवाद की जबरी समस्या पूरे विश्व को तपित किये दे रही है।

यह सुयोग ही कहा जाना चाहिये कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने छोटी-छोटी कही जाने वाली समस्याओं पर स्वयं ने ध्यान केन्द्रित कर सबके लिए इन्हें अहम माना और निराकरण के उपायों को भी महत्व देना प्रारंभ कर दिया। अच्छाइयों का परिणाम और असर धीरे-धीरे होता है पर हुआ, होता दिखाई दे रहा है।

सबसे अहम और बड़ी समस्या आतंकवाद है जिसकी ओर पूरे विश्व को चौकन्ना कर जो राष्ट्र इसे बढ़ावा दे रहा है, उसे भी इशारों-इशारों में चिन्हित कर देने का साहस दिखा दिया है। यह मात्र कथन का साहस न रह जाय, उस ओर ठोस नतीजाबद्ध कारगुजारी भी शुरू हो गई है।

हमारा राष्ट्र युद्धवीर नहीं होकर बुद्धवादी सोच और समझ लिए है। हम शांति के, भाईचारे के, मोहब्बत के पक्षधर हैं। किसी को छेड़ते नहीं मगर जो हमें छेड़ने की कोशिश करता है उसे छोड़ने वाले भी नहीं हैं। ऐसे कथन हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति, सुयोजित संकल्प, अटूट आत्मबल तथा साहसिक शौर्य के सेतुबंध हैं। हमारी नसों में फिर से जय श्री राम, श्रीश्री राम का उद्घोष प्रवाहित होने लग गया है। जय-विजय हमारी है।

पत्र-पिटारी

अब अच्छी कविताएं नहीं रहीं। कविता करने में गद्य-पद्य का भेद भी नहीं रहा। छंद आबद्ध कविता धारा टूट सी गई। कवि सम्मेलनों में यद्यपि भीड़ तो घटी नहीं पर वह दमखम नहीं रहा। कई बार लगता है, कविता हो ही नहीं रही है। चुटकुलेबाजी, चुहलबाजी तथा चूहेबाजी में ही कवि लमछराता श्रोताओं को लोटपोट या लोटघोट कर देता है। ऐसे में 'शब्द रंजन' में कभी-कभाक अच्छी कविताएं पढ़ने को मिल जाती हैं। 'लड़वीर कभी रोता नहीं' शीर्षक कविता में डॉ. महेन्द्र भानावत ने नये प्रतीक और आंचलिक परिवेश देकर जो उदात्त गांभीर्य दिया वह शौर्य, स्वाभिमान तथा अपनी धरती के सत्व को शाश्वत बनाता है। यह कविता केवल कथन नहीं करती, एक चित्रोपम संस्कृति का लोकाचार भी देती है।

-मूलचंद, हैदराबाद

तारा संस्थान के वृद्धाश्रम का भूमि पूजन

उदयपुर। तारा संस्थान द्वारा 150 वृद्धजनों के आवास हेतु हिरण मगरी, सेक्टर-14 में प्रस्तावित अत्याधुनिक वृद्धाश्रम का दशहरे के शुभ अवसर पर नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक डॉ. कैलाश मानव एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी अग्रवाल के आशीर्वादात्मक उपस्थिति में भूमि पूजन हुआ।

तारा संस्थान की संस्थापक एवं अध्यक्ष कल्पना गोयल ने बताया कि 150 बेड के अत्याधुनिक वृद्धाश्रम में सभी तरह की अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। कार्यक्र में दिल्ली के समाजसेवी राहुल भार्गव, श्रीमती सुलोचनादेवी मित्तल, अलीराजपुर से सुश्री सिन्दु कावले, मुम्बई से एच.सी. धवन, एटा से चंचल गुप्ता, अहमदाबाद से महावीर प्रसाद, बीकानेर से सहीराम सुतार, फरीदाबाद से योगेश गोयल, जोधपुर से कंचन देवी, हरीश जैन, सुरेश मित्तल आदि ने भाग लिया। संचालन संस्थान के मुख्य कार्यकारी दीपेश मित्तल ने किया।

ज्योति पर्व पर काव्यमयी किरणें

-बालकवि बैरागी-

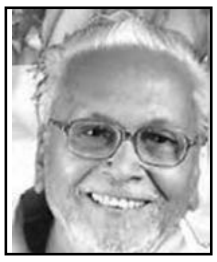

वर्षों से बालकवि बैरागी प्रतिवर्ष ही दीवाली पर कविताबद्ध बधाई भेजते रहे हैं। बहुत सारे बधाई पत्र डॉ. महेन्द्र भानावत के संग्रह में सुरक्षित हैं। उनमें से तीन यहां प्रस्तुत हैं-

(एक)

एक पीढ़ी बुझ रही है, एक पीढ़ी जल रही है
एक पीढ़ी और है जो गर्भ में ही पल रही है
इन विसंगत पीढ़ियों को कौनसा परिवेश देंगे
देश सौंपेंगे इन्हें हम या कि बस उपदेश देंगे
झिलमिलाती लौ, सनातन लौ, भला कब तक रहे
क्रूर अंधियारे क्षितिज के बोझ को कब तक सहे
तिलमिला कर सहनशीला लौ लपट यदि बन गई
तो न कहना ये दीवाली हाय ! कैसी मन गई।

(दो)

आंधियां आती रहें, तूफान टकराते रहें
साजिशें होती रहें, षड्यंत्र इठलाते रहें
किंतु तब भी जो दीया हारे नहीं, जलता रहे
व्रत नहीं हो भंग जिसमें हौसला पलता रहे
उस दीये को शक्ति दें, आल्हादमय आकाश दें
स्नेहमय उल्लास दें, आशीषमय विश्वास दें।।

(तीन)

धर्म को धधका दिया, सुलगा दिया हर जाति को
कर दिया पागल सयानी पीढ़ियों की पांति को
और फिर भी बात करते हैं सुहानी भोर की
मानिये मत मानिये पर चाल है यह चोर की
जब अंधेरे के सहोदर आ गये पहिचान में
ऐ किरन के वासियों! आजाओ फिर मैदान में।।

अंधेरा आतंकी हो गया है

जुगनू
अंधकार के छत्ते में ऐश कर रहे हैं
उजाले कैद हो गये हैं
हवाएं बांध दी गई हैं।
तुम्हें नहीं मालूम दीपक!
अकड़ से इतिहास बनाने वाले
सब ओर तने बैठे हैं।
तुम अकेले
अनजान अचल और अभय
स्नेहशील बने
रोशनी के रथ पर बढ़ रहे हो
मैं तुम्हें नमन करता हूं।
अब अंधेरा बड़ा घना
भयाक्रांत और आतंकी हो गया है
सावधान रहना।
आश्वासनों के आशारामों की खरपतवार
फफूंद की तरह
कच्ची कोमल और रसीली पैदावार
लीलती जा रही है।
हनुमान सीताफल खा रहे हैं
उजाले के सारे रास्ते
अंधेरों की भटकन से
अटे पड़े हैं।

एक ही हड़ल्ले में

मैं महसूस नहीं करता कि
मेरी मौज में खलल पड़ रही है।
कविता अधूरी भी रह जाती है
और कभी-कभी व्यर्थ भी हो जाती है।
जब एक ही हड़ल्ले में बन जाती है
तो अच्छी लगती है।
फिर मैं उसे सजाने संवारने में लगता हूं
समझलो उसकी पकाई करता हूं।
कई बार कविता बनती नहीं है
कलम भी कर्कश बन जाती है
कागज फाड़ देती है
लिखते घिसटते
पर कोई अक्षर उभर कर नहीं आता है।
कविता सबमें होती है
मगर उसे शक्ल देना सबके लिए
संभव नहीं होता।
जैसे बच्चों को हलुए की याद आ जाती है
वैसे ही कभी भी मेरे मन में
कविता उमड़ पड़ती है।
वह न रात देखती है न दिन
कोई भी समय
कुछ भी कर रहा होता हूं
घनी अंधेरी रात में भी
अचानक उठ जाता हूं
रोशनी के बिना ही
कागज कलम ले
आड़े टेढ़े हरुफ लिखता रहता हूं।
कहां से आती है कविता?
कौन लिखवाता है?
मुझे ही पता नहीं।

नारायण सेवा संस्थान में रावण दहन

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के हिरण मगरी स्थित परिसर प्रांगण में विजयादशमी पर श्री राम-रावण संवाद की मंचीय प्रस्तुति के बाद 40 फीट के दशानन रावण के पुतले का मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम द्वारा नाभि में बाण मारकर दहन किया गया और भव्य आतिशबाजी की गई।

मुख्य अतिथि संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव ने सुखी, सम्पन्न और सद्भावी समाज की रचना के लिए राम के जीवन को आदर्श बताया। सह संस्थापिका कमला देवी अग्रवाल ने विकारों और बुरे विचारों को समाप्त करने की प्रेरणा दी। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने राक्षसी वृत्तियों को समाप्त कर समाज को सुरक्षा प्रदान करने में राम की भूमिका को रेखांकित किया।

निदेशक वंदना अग्रवाल के नेतृत्व में मूक-बधिर व प्रज्ञाचक्षु बालकों की प्रस्तुतियां जन समुदाय में अत्यंत सराही गईं। झूम उठा। रावण दहन से पूर्व नईदिल्ली से आए रिया ग्रुप के कलाकारों ने गणेश वंदना, अष्टभुजा महाकाली, सत्यम् शिवम् सुंदरम्, भगवान शिव की भस्म आरती, पचंमुखी बालाजी की आकर्षक नृत्य-नाटिकाएं प्रस्तुत की। संचालन महिम जैन तथा आभार देवेन्द्र चौबीसा ने दिया।

पोथीखाना

कैसी-कैसी औरत, कोई-कोई औरत

जमीन से जुड़ी कविताएं

-डॉ. कुंदन माली-

समग्रत: साहित्य एवं विशेषत: कविता में अर्थ-गांभीर्य, प्रभाव व्यापकता एवं कलात्मक महत्ता के लिहाज से लोकभाषा तथा स्थानीयता को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। वस्तुत: जब कभी भी किसी कृति की पड़ताल करते समय विभिन्न स्थापित प्रतिमानों की सहायता अपर्याप्त दृष्टिगत होती हो, तब पाठक को अथवा आलोचक को काव्य-कृति-विशेष की सम्यक गवेषणा की खातिर कविताओं के भीतर उतरना अपेक्षित हो जाता है। डॉ. महेन्द्र भानावत की काव्य-कृति 'कोई-कोई औरत' को भी उपरोक्त दृष्टिकोण से ही देखा जाना चाहिये।

डॉ. भानावत की कविता में सबसे महत्वपूर्ण रेखांकित करने योग्य बात है स्थानीयता। स्थानीयता स्वयं में ही कभी-कभी बड़ी भारी बहस और वाद-विवाद का विषय बन जाया करती है। बहरहाल यहां इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि स्थानीयता महज आंचलिकता ही नहीं हुआ करती और न ही वह केवल परिवेश। प्रत्युत्त यह एक वृहद् उपादान है जो देश-काल-वातावरण के तत्व को गहराई तक जाकर रूपायित, परिभाषित और व्याख्यायित करता है। वस्तुत: देश-काल-वातावरण ही स्थानीयता को क्रियान्वयन के स्तर तक ले जाता है।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह में डॉ. महेन्द्र भानावत अपने देश-काल-वातावरण को पारदर्शिता की हद तक संरचित कर सके हैं। यही तथ्य इन कविताओं की सामर्थ्य बताने को पर्याप्त है। कविताओं की भावभूमि, संदर्भ, काव्य-चरित्र और भाषा ; ये तमाम तत्व कवि के अपने देश-काल-वातावरण को समर्पित हैं। यहां स्थानीय भाषा का कविता में तथाकथित 'पुट' नहीं है वरन् समूची काव्य-संरचना ही स्थानीय भाषा में संस्कारित है। यह किसी भी कवि के लिए एक उल्लेखनीय सफलता है। उदाहरण के लिए ये पंक्तियां देखें-

तुम्हें क्या मालूम ?
ज्यों-ज्यों वह फूलता मेरा परिवार फूलता
उसके फलने पर मेरा घरबार फलता
थाली जितने बड़े पत्ते थे उसके
सिंदूर सी सिंदराई उसकी कोंपलें थीं
सोने सी उसकी छाल
नख से उतारी जाती थी
बड़ला दूध देता
जैसे पूत देता
कितना सपूत था वह
तुम्हें क्या मालूम ?

(तुम्हें क्या मालूम- पृ. 14)

इन कविताओं में डॉ. भानावत मुसलसल तौर पर काव्य-भाषा के प्रति एक प्रकार की विचित्र सजगता अपनाते दिखाई देते हैं। यहां कवि ने बरते गये तद्भव शब्दों के तत्सम् रूप नहीं देकर कविताओं के सहज प्रवाह, रवानी तथा पठनीयता को बाधित होने से भी बचाया है। हमें यह कहने में कोई दुविधा नहीं है कि डॉ. भानावत की कविता में स्थानीय भाषा के शब्द-प्रयोग के तात्पर्य हम स्थिति और संदर्भ के हिसाब से कविता पढ़ने के साथ-साथ ही उपलब्ध करते चलते हैं। दरअसल, यहां यह अधिगम शब्दार्थ की अपेक्षा जीवंत बिम्ब के रूप में विद्यमान है और इसको इसी परिप्रेक्ष्य में समझना अपेक्षित है। प्रकारांतर से इस अधिगम का अर्थ यह भी है कि स्थानीय भाषा बिम्बधर्मिता के अधिक निकट होती है।

'कोई-कोई औरत' की अधिसंख्य कविताएं प्रत्यक्षानुभूति निसृत कविताओं का सफल उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। धैर्य, संयम के साथ इन कविताओं से गुजरने पर कवि के इस अभिकथन की ताईद होती है कि - 'मेरी कविताएं मेरा अपना सबका संसार है। हर कविता के साथ एक घटना है, कहानी है जो मैंने देखी, सुनी किंवा भोगी है। इसीलिए सबकुछ यथार्थ है। ऐसा यथार्थ जहां अधिकांश व्यक्ति व्यथार्थ लिए जी रहा है।' मिसाल के तौर पर वही-वही, मनीप्लांट, मझ दोपहरी, चिड़ा और मैं, बंटवारा, अजन्मा-जन्म इत्यादि कविताओं को सहज ही याद किया सकता है।

लोकरंग, लोकभाषा और लोकसंस्कार से संस्कारित डॉ. भानावत की इन कविताओं की एक खूबी मानी जायेगी-व्यंग्य का स्वर तथा काव्यलय परस्पर इतने घुलमिल जाते हैं कि पाठक विस्मित रह जाये। कविता में व्यंग्य का इस्तेमाल कवि महज छेड़छाड़ करने को नहीं करता और न ही परपीड़न के लिए बल्कि उसके व्यंग्य में भी करुणा, सहानुभूति का समान अंश विद्यमान रहता है। इसको प्रसिद्ध समालोचक इयान जैक ने 'त्रासद व्यंग्य' (ट्रेजिकल स्टायर) कहा है। इसी बात को इस संकलन की प्रस्तावना में डॉ. प्रभाकर माचवे के हवाले से पुष्ट किया जा सकता है।

कुल मिलाकर पच्चीस कविताओं के इस छोटे से काव्य-संग्रह का महत्व स्थानीयता, निजी परिवेश, अनुभूतिजन्य गांभीर्य, व्यंग्य तथा करुणा के समन्वित स्वरूप के कारण ही नहीं आंका जाना चाहिये, बल्कि इस बात से भी कि जहां एक ओर ये कविताएं पाठक को मानसिक स्तर पर और ज्यादा परिपक्व तथा व्यापक धरातल प्रदान करने में सक्षम है, वहीं दूसरी ओर समकालीन कविता के परिक्षेत्र में ये कविताएं अनगिनत अछूते, सहज, सरल शब्द-बिम्बों के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। ये शब्द-बिम्ब ही इन कविताओं के लिए मेरु दण्ड का दायित्व वहन करते हैं तथा ये ही इनकी जीवंतता के प्रतीक हैं।

रीता, देखता-भालता, घेरघुमेर, चारुंमेर, बड़ला, पूरबज, वरस, अमचूरिया, मिजाजण, टींच, कुचरना, लथेड़ना, खांडना, आटी-चोटी, सिणगार, लेजदेज, कापड़ा, झाल, टोकर, जनमपतरी, गठान, पगथली, पंगेरी, लाड़-लड़ाना, भांपना, गुग्गा, भड़की, धोवना, कण-कण, कड़ीके और भुसती जैसे कितने ही जीवंत शब्दों, शब्द-बिम्बों की सघनता तथा इनके प्रयोग से कविता में प्रविष्ट चित्रात्मक गुणवत्ता के लिहाज से भी समकालीन कविता का भाषात्मक स्तर आवश्यक रूप से प्रभावित-लाभान्वित होता है, इस मायने में 'कोई-कोई औरत' की काव्य सार्थकता स्वयंसिद्ध है।

सहज भाषा और सहज अर्थ-संकेतों के लिए प्रशंसनीय

-डॉ. नवलकिशोर-

डॉ. महेन्द्र भानावत बहुमुखी प्रतिभा के लेखक हैं। उनकी विशेष ख्याति लोकसाहित्य एवं कला के मर्मज्ञ अध्येता के रूप में है लेकिन सर्जनात्मक क्षेत्र में भी वे बहुत सक्रिय रहे हैं। संभवत: कथा को छोड़कर उन्होंने सभी विधाओं में लिखा है। यद्यपि उनकी एक कविता पुस्तक 'कोई-कोई औरत' को प्रकाशित हुए कई वर्ष हुए किंतु कवि के रूप में वे कम ही पहचाने जाते हैं। लोकसाहित्य के विषय में उन्होंने इतना विपुल कार्य किया है कि उनके लेखकीय व्यक्तित्व के अन्य पक्ष लगभग उपेक्षित हो गये हैं। एक क्षेत्र विशेष में बहुमान्य लेखकों को प्राय: ही ऐसी स्थिति से गुजरना होता है। डॉ. भानावत को भी अपने अन्य लेखन के लिए मान्यता धीरे-धीरे ही मिली है। कवि के रूप में अभी भी वे बहुत चर्चित नहीं हैं लेकिन उनकी क्षमता को पहचाना जाने लगा है। अभी पढ़ी गईं कविताएं उनकी रचनात्मक क्षमता का अच्छा प्रमाण हैं।

'नहीं-नहीं करते' में कविता की सार्थकता के बारे में भानावतजी ने एक बिल्कुल नये अंदाज में अपना बयान दिया है। हर चिंतनशील लेखक को साहित्य की उपादेयता का सवाल कभी-न-कभी बेचैन करता ही है। रचना-कर्म का सांसारिक सफलताओं के लिए कोई महत्व नहीं, अत: दुनियायी दबाव एक लेखकी को बाध्य करते हैं कि वह साहित्य और कला के प्रति समाज में व्याप्त मूढ़ता से बार-बार जूझे। इस जूझने में ही उसका उत्तर निहित होता है। उत्तर की मौलिकता ही किसी लेखक के वक्तव्य को महत्वपूर्ण बनाती है बावजूद इस तथ्य के कि उस तरह के वक्तव्य का संदेश चिर-परिचित होता है। कोई वक्तव्य किस तरह महत्वपूर्ण बनता है, इसे स्पष्ट करने के लिए इसी सवाल का जो जवाब जैनेन्द्रजी ने दिया है, उसे यहां उद्धृत करने का मोह हो आया है-

''कहानी लिखी गई, पढ़ी गई, मनोरंजन हो गया पर रोटी तो नहीं मिली। आप पूछें कि तब साहित्य की बात क्यों की जाती है? पेट भरने का, रोजगार का कोई नुस्खा बताइये, बाद में आर्ट को भी देखेंगे। जिस चीज की चाह नहीं वह आप नहीं मांगते। हवा आप नहीं मांगते। यदि आपमें साहित्य की मांग नहीं हो तो हो सकता है कि आप अपनी असली आवश्यकताओं से आंख फेरे हुए हैं। साहित्यिक आपके सवाल की दुनिया को साफ रखता है। साहित्य हमारी सुख और भोग की भावनाओं से ऊपर है।'' जैनेन्द्रजी ने यहां साहित्य को हवा की तरह जरूरी बताया है जो हमारे खयालों की दुनिया को साफ रखता है।

भानावतजी की कविता में श्रीमती और डॉक्टर सुख-भोग की दुनिया के प्राणी हैं जिन्हें यह समझ नहीं कि-

'दवाई जीवन नहीं
कविता ही जीवन है
सूर, तुलसी और मीरां आज भी दवाइयों से नहीं
कविताओं से जी रहे हैं।'

शुरू का मजाकिया लहजा और बाद का सूफीयाना बयान विडम्बना से गंभीरता की ओर ले जाता है और कविता का मूल्य बड़ी खूबी से उजागर कर जाता है। परहेज, बीमार, खाई, जीवन जैसे साधारण शब्द असाधारण हो उठते हैं और यह छोटी सी कविता एक बुनियादी सवाल का एक बड़ा जवाब बन गई है।

'तुम्हारे कहते-कहते' में युद्ध विरोधी भावना की अभिव्यक्ति दी गई है। जीवन की कविता में प्रकृति और पुरुष का सामरस्य है। उससे उस अनहद नाद की सृष्टि होती है जो सनातन भी है और अधुनातन भी। युद्ध सिर्फ प्रत्यक्ष दुष्परिणामों का नाम नहीं है-

वे युद्ध क्या युद्ध होते हैं
जिन्हें आदमी लड़ता है
सुना है तुमने ?
युद्ध की भी एक गंध होती है।'

इसलिए जब युद्ध होता है कविता की कोंपलों में सिन्धु आ समाता है और आदमी की आंखें रक्ततलाई बन अंगारे उगाती हैं।

इस प्रकार यह कविता युद्ध का विरोध केवल सतह पर नहीं करती, उस आदिम बर्बरता से साक्षात्कार कराने का प्रयास करती है जिसके प्रभाव में सारी पृथ्वी पगला जाती है लेकिन इस कविता में कथ्य अन्तर्मुक्त नहीं हुआ है, थोड़ा पाठक को जोड़ना पड़ता है।

शब्द-मोह-अर्थ-संगति में बाधक हो गया है। जीवन की कविता में अनहद जूझना क्या प्रयोग सामरस्य का, शांति का वाचक नहीं हो पाता। खजूर, पीपल, नीम साधारण प्रभाव ही उत्पन्न कर पाते हैं। कवि बहुधा अनकहे से बहुत कुछ ह जाता है पर कभी-कभी जहां कहना बहुत जरूरी होता हो, वहां अनकहे से काम नहीं चलता। 'आदमी क्या लड़ेगा युद्ध' और 'कविता की कांपलों में सिंधु आ समाता है' जैसी पंक्तियां कवि-वक्तव्य में कुछ अधूरेपन का ही आभास देती हैं। मेरी दृष्टि में यह कविता एक अच्छी कविता की भूमिका बनकर रह गई है।

'अच्छा होता गांव' एक व्यंग्यात्मक कविता है। भानावतजी के व्यंग्य दिलचस्प होते हैं। गद्य में भी और पद्य में भी। इनमें वे एक ऐसे जागरूक पत्रकार हो जाते हैं जो समाज की व्यथा-कथा कहता होता है। कवि का संवेदनशील मन गांव की हालातों से विक्षुब्ध है और अपने विक्षोभ को वह व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देता है-

'आदमियों से अधिक मच्छर
मच्छर से अधिक बीमारी
बीमारी से अधिक श्मशान
श्मशान से अधिक काल और अकाल।'

कवि एक भयावहता से हमें अवगत कराता है। पहले पैरा के बाद अर्थात् काल और अकाल का / भय फैला होता है के बाद आखिरी पैरा अर्थात् 'लोग कहते हैं' से 'इस गांव में मेरे देश की मूल आत्मा है' तक की पंक्तियां ही इस कविता में होती तो कविता अधिक गठी हुई होती।

व्यंग्य अधिक प्रखर होता और अनकहे से बहुत कुछ कहा गया होता। बीच का अंश अप्रासंगिक नहीं है। अवांछित भी नहीं है पर बहुत जरूरी भी नहीं है बल्कि एक तरह से गैर जरूरी है क्योंकि अतीत मोह के एक नोस्टेलजिया में वह हमें ले जाता है।

युगों से भारतीय गांव की असलियत ऋतुओं के रंभाने और हवा के सर्राटों में नहीं 'कीचड़' में है। पंतजी ने जो कहा था- 'भारतमाता / मिट्टी की प्रतिमा / उदासिनी' वह आज भी सच है। इस सच की बड़ी खरी तस्वीर भानावतजी की इस कविता में है। मेरी आलोचना केवल उसे और सुगठित रचना के रूप में प्रस्तुत करने के सुझाव को लेकर है।

भानावतजी की उक्त कविताएं सहज भाषा और सहज अर्थ-संकेतों के लिए प्रशंसनीय हैं। लोकसाहित्य की सहज समृद्धि भी उनकी कविता में आएगी, ऐसी अपेक्षा हम उनसे कर सकते हैं।

(आकाशवाणी उदयपुर के 'साहित्य सुधा' स्तंभ के अन्तर्गत 6 जनवरी 1989 को प्रसारित तथा भारतीय भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में मुम्बई की राजस्थान ग्रेजुएट एसोसिएशन द्वारा सन् 1982 में पुरस्कृत।)

आदिवासी विमर्श पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान की पहचान 'मरुप्रदेश' नहीं

आदिवासी विमर्श पर कई कोणों से विचार किया जा सकता है। आदिवासियों पर जिन्होंने लिखा उनमें से कइयों ने आदिवासी नहीं देखा। उसके संसर्ग में आये बिना, उसकी जीवनधर्मिता से परिचित हुए बिना जिन्होंने लिखा वह लेखन प्रामाणिक और परिपक्व भी नहीं माना गया। बिना देखे, सुने, समझे लेखन और देखे, सुने, समझे जाकर लिखने के लेखन में बड़ा अंतर होता है। ये विचार यहां सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित 'समकालीन आदिवासी : सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य' नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन, 8 अक्टूबर को द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. महेन्द्र भानावत ने व्यक्त किये।

डॉ. भानावत ने कहा कि राजस्थानी के प्रख्यात कवि श्रद्धेय कन्हैयालाल सेठिया महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन का पुरस्कार लेने जब उदयपुर आये थे तब उन्होंने उन्हें हल्दीघाटी के दर्शन कराये। सेठियाजी तब उसके चारों ओर की पहाड़ियों को अचरजभरी निगाहों से देर तक निहारते रहे। अनुकूल अवसर पाकर डॉ. भानावत ने कहा कि आपने 'धरती धोरा री' लिखकर पूरे राजस्थान को 'रेती-स्थान' बता दिया जबकि प्रदेश के मारवाड़ के तीन-चार जिलों को छोड़ शेष सभी जिले 'खेती-स्थान' लिए हैं। सेठियाजी कुछ कहना नहीं चाहते थे किंतु डॉ. भानावत ने जब विवश कर दिया तो उन्हें कहना पड़ा- 'यदि तब मेवाड़ देख लेता तो यह पंक्ति नहीं लिखता।'

दरअसल उस सत्र में जो परचे पढ़े गये उसमें से एक परचा गोवा की डॉ. रूपा च्यारी ने गोवा के आदिवासियों का सामाजिक और सांस्कृतिक परिचय पर पढ़ा था किंतु भूमिका में उसने राजस्थान को 'मरुप्रदेश' कहकर बड़ा उत्साह जताया था। उसी संदर्भ में डॉ. भानावत को कहना पड़ा कि इस प्रदेश की धरती को, जो भी आता है, नमन करता है और यहां की माटी को शीश चढ़ता है। इसलिए कि यह भूमि शक्ति और भक्ति की पुण्यशाली भूमि है। शक्ति के प्रतीक प्रताप और भक्ति की प्रतीक मीरां की यशोगाथा पूरे विश्व में व्याप्त है। इसी भूमि पर संत, सतियां और शूरमा साथ-साथ हुए। ऐसा संगम और किसी अंचल में नहीं मिलेगा।

वीरवर कल्लाजी राठौड़ का उदाहरण देते हुए डॉ. भानावत ने कहा कि वे ऐसे योद्धा थे जिनका मुंड दुश्मनों ने तलवार के घाट उतार दिया तब वे मुंड विहीन शरीर-रुंड से लड़ते हुए, दुश्मनों को खदेड़ते चित्तौड़ से चलकर उदयपुर से भी आगे सलूम्बर से दूर तक पहुंचे और जहां उनका रुंड गिरा वहां रुंडेड़ा नामक गांव बसा जो आज भी अस्तित्व में है।

डॉ. भानावत ने एक संगोष्ठी का हवाला देते हुए कहा कि एकबार एक बड़े होटल में बड़े विद्वान एकत्र हुए जो सुदूर की हवाई यात्रा कर आये थे। डॉ. भानावत ने भांप लिया था कि उनकी जमीन आदिम गंधी नहीं है तब बोले कि आपमें से कितने लोग हैं जिन्होंने आदिवासी को देखा? इस संगोष्ठी में क्या कोई आदिवासी उपस्थित है? जब किसी तरह की आदिवासी भावभूमि नहीं है तो क्या हमारा आदिवासियों को लेकर विचार-विमर्श कोई सार्थक निष्कर्ष दे सकेगा? उस संगोष्ठी का सारा पारा जो शिखर पर था, धम्म से शून्य पर आ गिरा।

डॉ. भानावत ने कहा कि प्रारंभ से ही उनका लेखन आदिवासी समाज का ही लेखन रहा जो अब भी चल रहा है। उन्होंने बताया कि सन् 1967 में जब उदयपुर विवि ने पहलीबार दीक्षांत समारोह आयोजित किया तब उन्हें पीएच.डी. की उपाधि मिली थी। उसका विषय आदिवासी भीलों में प्रचलित गवरी नाट्य ही था जबकि 1965 में ही गवरी नाचने वाले गमेती समाज की ओर से एक छपा परचा प्रसारित किया गया था कि अब कोई भी गवरी नहीं नाचेगा कारण कि यह पिछड़ेपन की निशानी है जबकि हम विकास की नई धारा से जुड़ गये हैं। लेकिन गवरी अब भी निरन्तर जारी है और इस बार तो उदयपुर खंड में 50 गवरी दलों ने अनुष्ठानमूलक रक्षाबंधन के दूसरे दिन से 40 दिन तका उत्सव मनाया। इसलिए विद्वानों को चाहिए कि वे बार-बार अपने कथन में इस बात का रोना न रोयें कि संस्कृति का क्षरण हो रहा है। परंपराएं नष्ट हो रही हैं। आंसू बहाने और निराश होने से किसी संस्कृति का उद्धार नहीं होने वाला है। इसके लिए संकल्पपूर्वक हमें कुछ ऐसा काम करना होगा जिससे लोग यह जान सकें कि उनके पास जो पारंपरिक समृद्ध थाती है उसका हर तरह से संरक्षण होना चाहिये और उसके लिए समयबद्ध आधारभूत वांछनीय परिवर्तन किस प्रकार, किस रूप में किया जा सकता है।

प्रख्यात कथाकार डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर ने तृतीय सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में कहा- आदिवासी समाज और संस्कृति भारतीय जीवनमूल्यों की धरोहर है। उसी से आज भारत की संस्कृति का अक्षय आदि स्वरूप पहचाना जाता है। पहलेपहल दुनियां आदिवासियों की थी। बाद में उनको खदेड़कर सामंतशाही और राजशाही ने उस पर कब्जा कर अपनी-अपनी राजधानी बनाई। आदिवासियों के साथ आज तक ऐसा ही निरन्तर होता रहा है।

अब जब वैश्वीकरण के नाम से संशोधित बाजारवाद डंक मारने लगा है तब आदिवासी के निश्छल निस्वार्थी और परिपक्व तथा लोक मर्यादित समाज की याद आ रही है। वह भी इसलिए कि उसको मिटाये या प्रदूषित किये बिना उसकी दाल नहीं गलेगी। स्वतंत्रता, समानता तथा भाईचारे का जीवन जीने वाला विश्व का आदिवासी समाज समस्त भ्रांतियों से परे प्रकृति की मौलिक सुगंध बिखेर रहा है। निस्संदेह आज भी उसका प्रतिनिधित्व हर क्षेत्र में अपने अस्तित्व की दखल दर्ज करा सकता है।

स्मारिका प्रकाशन :

इस अवसर पर आदिवासी समाज, संस्कृति और साहित्य नाम से एक स्मारिका प्रकाशित की गई। इसके प्रधान संपादक हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. माधव हाड़ा, संपादक संगोष्ठी संयोजक सहायक आचार्य डॉ. नवीन नंदवाना तथा प्रादेशिक परिवहन अधिकारी डॉ. एम.एल. रावत हैं। बड़ी साइज की 300 पृष्ठों की इस स्मारिका के चार खंडों- समाज, संस्कृति, विमर्श तथा साहित्य में 79 आलेख छपित हैं जो देश के विभिन्न अंचलों में व्याप्त आदिवासी जीवनधर्मितापरक बड़ी उपयोगी, मूल्यवान तथा शोधातन है।

वैश्य समुदाय के कार्यक्रम में अमित शाह मुख्य अतिथि

उदयपुर। भाजपा अध्यक्ष अमित शाह 16 अक्टूबर को हरियाणा में आयोजित वैश्य समुदाय के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे जिसमें वैश्य समुदाय से जुड़े कई जातियों के प्रतिनिधि भी आ रहे हैं। कार्यक्रम में विभिन्न प्रदेशों के राजनीतिक दलों के वैश्य समुदाय के 29 सांसद व 111 विधायकों को भी 15-16 अक्टूबर को अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया है। कार्यक्रम का आयोजन राज्यसभा सांसद और मीडिया जगत के दिग्गज डॉ. सुभाष चंद्रा ने किया है।

इस साल ये एक विशेष आयोजन है जिसमें कई ओबीसी जातियों को 10,0000 की उपस्थिति में 'वैश्य' सरनेम दिया जाएगा। वैश्य समुदाय जो कि एक जाति नहीं, बल्कि एक विचार है और इसे से जुड़ी हुई 334 समुदायों की सूची से ये पता चलता है कि महेश्वरी, जायसवाल, ओसवाल, हलवाई, सुनार, कायस्थ, माथुर, साहू, जैन, रस्तोगी, सेठी आदि मुख्यत: उत्तर भारत से हैं और गुजरात से शाह, गाँधी, मेहता दक्षिण भारत से लिंगायत, वेंकटेश, शेट्टी आदि वैश्य समाज से नहीं पर ये अग्रोहा के निवासी थे।

वर्तमान में ओबीसी श्रेणी में प्रजापति (कुम्हार), खाती, लुहार, तेली आदि भी वैश्य समुदाय के घटक हैं। इसमें किसी तरह का कोई शक नहीं है। (ऐसा विश्वास और मान्यता है कि महाराजा अग्रसेन के सामने ही महालक्ष्मीजी ने साक्षात् दर्शन दिए थे।) इसी वजह से शरद पूर्णिमा पर विगत 34 साल से अग्रोहा में एक समागम का आयोजन किया जाता है। डॉ. सुभाष चंद्रा ने कहा है कि 16 अक्टूबर को एक आम सभा का भी आयोजन किया है जिसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है।

सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए हिन्दुस्तान जिंक पुरस्कृत

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की इकाई सिन्देसर खुर्द खदान को सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए फेडरेशन ऑफ इण्डियन मिनरल इण्डस्ट्रीज (फीमी) ने 'एनएमडीसी सोसियल अवेयरनेश अवार्ड' से पुरस्कृत किया है। यह सम्मान हिन्दुस्तान जिंक द्वारा अपनी इकाइयों के आस-पास के क्षेत्रों में सामाजिक उत्थान एवं ग्रामीण विकास हेतु प्रदान किया गया है।

सम्मान माननीय खान, ऊर्जा, कोयला एण्ड न्यू एण्ड रिन्यूवबल एनर्जी के केन्द्रीय राज्यमंत्री पीयुष गोयल ने दिल्ली में प्रदान किया जिसे जिंक के हेड-मील जॉयदीप चन्द्र ने तथा शील्ड एवं प्रमाणपत्र एस.एन. टेलर ने प्राप्त किया। ग्रहण किये। इस अवसर पर हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुनील दुग्गल, भारत सरकार के खान मंत्रालय के खान सचिव एवं वरिष्ठ अधिकारी, भारत की कई प्रमुख कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारी तथा खनन प्रोफेशनल्स भी उपस्थित थे।

सिस्को द्वारा विनिर्माण परिचालनों के लॉन्च की घोषणा

उदयपुर। सिस्को ने भारत में अपने विनिर्माण परिचालनों के लॉन्च की घोषणा की। कार्यक्रम में, सिस्को और महाराष्ट्र सरकार ने राज्य के डिजिटल रूपांतरण में सहायता हेतु नई स्थानीय रणनीतिक पहलों की भी घोषणा की। इन पहलों में नागपुर शहर में स्मार्ट सिटी समाधान शुरू करने हेतु पूरे शहर भर में स्मार्ट सिटी ढांचे की स्थापना, ई-कॉमर्स हब के निर्माण हेतु धारावी में स्थानीय उद्यमियों के लिए कौशल विकास एवं छात्रों के लिए डिजिटल लर्निंग, नेटवर्किंग एकेडमी प्रोग्राम का विस्तार, और फेट्री गांव में डिजिटल शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा पहलें शामिल हैं।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस, नेशनल इंस्टीट्युशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (नीति) आयोग के सीईओ अमिताभ कांत, भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की सचिव श्रीमती अरूणा सुंदरराजन, सिस्को के सीईओ, चक रोबिन्स, सिस्को एशिया और जापान के सीनियर वाईस प्रेसिडेंट इरविंग टैन, सिस्को इंडिया व सार्क के प्रेसिडेंट दिनेश मलकानी और सिस्को सप्लाई चेन परिचालनों के वाईस प्रेसिडेंट जुन किम की मौजूदगी में इस निर्माण परिचालन को लॉन्च किया गया।

'मेक इन इंडिया' पहल को समर्थन देने हेतु, सिस्को विविधतापूर्ण उत्पाद पोर्टफोलिया का निर्माण करेगा सिस्को, नागपुर में स्मार्ट सिटी समाधान शुरू नहीं करेगा ताकि पूरे शहर में नेटवर्क कनेक्टिविटी, स्मार्ट एवं सुरक्षित वाई-फाई हॉटस्पॉट्स, स्मार्ट सुरक्षा एवं निगरानी समाधानों को सक्षम बनाया जा सके। सिस्को, भारत के ग्राहकों के लिए उत्पादन, ऑर्डर्स की सुपुर्दगी, टेस्टिंग, विकास, लॉजिस्टिक्स एवं घरेलू मरम्मत क्षमताओं हेतु अपने भारतीय परिचालनों का उपयोग करेगा। सिस्को ने डिजिटल महाराष्ट्र को गति देने के प्रति अपने संकल्प के साथ कई अन्य पहलों की भी घोषणा की, ताकि भारत के सभी नागरिकों को कनेक्टिविटी का लाभ प्राप्त हो सके।

वोडाफोन ने किया रीटेल फुटप्रिन्ट का विस्तार

उदयपुर। भारत के प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाताओं में से एक वोडाफोन

इण्डिया ने जयपुर में सात मिनी स्टोर्स का शुभारम्भ किया। इसी के साथ राजस्थान में वोडाफोन मिनी स्टोर्स की कुल संख्या एक बड़े आंकड़े पर पहुंच गई है। कम्पनी के 33 स्वामित्व स्टोर्स और इन 7 मिनी स्टोर्स के शुभारम्भ के साथ ही वोडाफोन ने राजस्थान के मोजूदा टेलीकॉम ब्राण्ड्स में अपना सबसे बड़ा रीटेल फुटप्रिन्ट स्थापित कर लिया है।

वोडाफोन राजस्थान के बिजनेस हैड, अमित बेदी ने कहा कि वोडाफोन ने ग्लोबल फोर्मेट में इन स्टोर्स को लॉन्च किया है जो उपभोक्ताओं को बेजोड़ सेवाओं का अनूठा अनुभव प्रदान करेंगे। वोडाफोन का राजस्थान में पहले से ही सबसे बड़ा और विकसित रीटेल फुटप्रिन्ट है। हमें गर्व है कि हम इस नेटवर्क में सात नए वोडाफोन मिनी स्टोर्स और जोड़ रहे हैं।

मानव मसीहा ....

(पृष्ठ दो का शेष)

पुस्तकों तथा शास्त्रों में जो मान्यताएं हैं वे लोकमान्यताओं से जुड़ी भी हैं और भिन्न भी। यह भी कि लोक में जो चीजें प्रचलित हैं उनका अध्ययन प्रथमत: तो लोक घटित ज्ञान संपदा के आधार पर ही होना चाहिए ताकि व्यावहारिक संकल्पनाओं से अधिकाधिक परिचित हुआ जा सके।

मेरे लिए दिक्कत यह थी कि मैं साधु-साध्वियों के लेखन अथवा कृतित्व को वहीं बैठकर अपनी डायरी में नहीं लिख सकता था और न उनके समक्ष सीधे नोट्स ही ले सकता था। यदि कुछ लिखना होता तो मैं उसे मन में धार कर बाहर आता और लिखता फिर उनके पास जाता और पढ़-सुन पुन: बाहर आता और अपनी डायरी में लिखता। यह प्रक्रिया बड़ी लम्बी और उलझन भरी लगी। मैंने इस बाबत महाप्रज्ञजी से निवेदन भी किया तो वे मुस्कराए और बोले, ''अपने धर्मसंघ की यही परम्परा है लेकिन इस बारे में भी चिंतन चल रहा है। देखो कोई हल निकल आये।''

उस परम्परा से लेकर आज तक जो सुखद एवं समयानुकूल आवश्यक परिवर्तन हुए वे बड़े ही उपयोगी, मूल्यवान और जीवनधर्मिता के व्यावहारिक सोपान हैं। इसके चलते इस धर्मसंघ ने पूरे विश्व में अपनी पहचान पुख्ती की है।

आचार्यश्री तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के शतरंगी प्रकाश थे जिन्होंने अपनी बंधीबंधाई परम्परा को मथते हुए कई नए प्रभावी सूत्र दिये तो महाप्रज्ञ उन सूत्रों के व्यावहारिक व्याख्या एवं भाष्यकार थे जिन्होंने समय की नब्ज को पहचानते हुए तदनुकूल दर्शना दी। प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत आंदोलन, अहिंसा यात्रा, नशामुक्ति, नया मोड़ जैसे प्रकल्प विश्वशांति के लिए अनुकरणीय सिद्ध हुए।

आचार्यश्री ने मुझे अणुव्रत आंदोलन से भी जोड़ा। देवीलाल सामर और मैं कलामंडल के कठपुतली कलाकारों को लेकर बीदासर पहुंचे। वहां कलामंडल के कठपुतली प्रदर्शनों की बड़ी सराहना हुई तब आचार्यश्री का यह विचार बना कि अणुव्रत के सिद्धांतों के प्रचार के लिए कठपुतलियां कारगर सिद्ध हो सकती हैं। वहीं सामरजी को अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का अध्यक्ष बनाया गया और मुझे उसकी कार्यकारिणी में लिया गया। दिल्ली के अणुव्रत भवन में तब जो गोष्ठियां हुईं उनमें ऐसे कई विचार उभर कर आये जिनसे अणुव्रत आंदोलन को व्यापक भूमिका मिली। कठपुतलियां भी एक सशक्त माध्यम बनीं। सामरजी ने वर्षों तक कठपुतलियों के माध्यम से देश के कोने-कोने और विदेशों में भी अणुव्रत के सिद्धांतों का अनुरंजनीय प्रसार किया।

सन् 1971 में सामरजी की षष्टि-पूर्ति समारोह पर मेरे संपादन में 'गेहरो फूल गुलाब रो' नाम से अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने अपना मंगल संदेश भेजते लिखा- ''जो शाश्वत को अभिव्यक्ति देता है वही सच्चे अर्थ में कलाकार है। श्री देवीलाल सामर को मैंने ऐसे ही कलाकार के रूप में पाया है। वे ज्ञान की कुल्हाड़ी से श्रद्धा के कल्पतरु को काटने में विश्वास नहीं करते इसीलिए वे ग्रामीण व अनपढ़ लोगों की भावना को जगाने में बहुत सफल हुए हैं। कठपुतलियों में प्राण भरने की क्षमता जिसे प्राप्त है वह व्यक्ति निष्प्राण नहीं हो सकता।''

सामरजी के निधन के पश्चात जब मैं कलामंडल का निदेशक था तब एक रात्रि को आचार्यश्री तुलसी सहित अन्य सहवर्ती साधु-साध्वियों ने कलामंडल का भवाई, तेराताली नृत्य तथा कठपुतली प्रदर्शन का कार्यक्रम देखा था तब महाप्रज्ञजी ने मुझे कहा था - ''अपने लेखन में लोककला-संस्कृति के साथ धर्म का समन्वय अवश्य रखना। धर्ममय कला-संस्कृति और कला-संस्कृतिमय धर्म ही जीवन को परिपूर्ण बनाता है। आदिम जीवन से लेकर आज के अधुनातन जीवन जीने वालों में भी यदि धर्म और कला का उत्तम समन्वय है तो वे सुखी जीवन का निर्वाह कर रहे हैं। विसंगतियां तभी आती हैं जब इनका संतुलन बेमेल हो जाता है।'' मेरे लिए उनकी यह सीख आज भी प्राणवंत प्रासंगिक बनी हुई है।

आचार्य तुलसी ने जहां-जहां भी विचरण किया, महाप्रज्ञजी सदैव उनके साथ रहे। दोनों का संबंध मसीहा-महर्षि का था। अपनी शोधयात्राओं के दौरान जहां-जहां, जब-जब भी अवसर मिला मैंने आचार्यश्री एवं महाप्रज्ञजी के दर्शन किए। वे सदैव मुझे लेखन की ओर प्रवृत्त करते रहे और लेखन संबंधी जानकारी लेते रहे। मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत और माता डेलूबाई को उन्होंने हर समय याद किया। वे अक्सर जिक्र किया करते थे कि मेरी माताजी बड़ी सुधारवादी थीं। कानोड़ में सबसे पहले उन्होंने ही आचार्यश्री के कहने से विधवा (काले) वस्त्र त्याग कर श्वेत वस्त्र धारण किये। नरेन्द्र ने भी जैन दर्शन की अच्छी पकड़ रखी। जयपुर में आचार्यश्री और महाप्रज्ञजी ने भाई साहब के आवास पर पधार कर माताजी को दर्शन दिये जब वे बीमार चल रही थीं।

माताजी के समक्ष जब भी आचार्यश्री का जिक्र चलता, मां अपने दोनों हाथ जोड़ उन्हें नमन करतीं। फिर हमारी बात सुनती। कानोड़ में तो आचार्यश्री ने माताजी को कहा ही था- ''एक महिला के लिए उसका विधवा होना ही जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है फिर इन काले कपड़ों को धारण कर जीवन को और क्यों अंधकारमय बनाती हो।'' आचार्यश्री के इस कथन का माताजी पर यह प्रभाव पड़ा कि उन्होंने तत्काल काले कपड़े पहनने के सौगन ले लिए और आजीवन सफेद वस्त्र पहने। उनके देखादेख अन्य महिलाओं ने भी उनका अनुसरण किया। यही नहीं, माताजी ने दहेज लेने के भी त्याग किये। उनका यह प्रभाव हमारे में, हमसे जुड़े अन्य परिजनों, बहिन-बेटियों में भी बदस्तूर जारी है।

उदयपुर के 2007 के चातुर्मास में मैंने महाप्रज्ञजी के सपरिवार दर्शन किये। एक दिन तनिक मुस्कराते हुए उन्होंने कह दिया- ''पहले इतने अधिक आते थे कि अब उसका बैलेंस पूरा कर रहे हो।'' मुझे समझते देर नहीं लगी कि अब मैं अधिक नहीं जुड़ पा रहा हूं। एक समय था जब मैं प्रतिदिन सामायिक करता था और उसमें नवकार मंत्र की माला फेरता था। मुझे अच्छी तरह याद है, एक दिन सामायिक में मैंने ध्यानस्थ हो नवकार मंत्र की पांच मालाएं फेरीं और फिर जब घड़ी देखी तो पूरे 48 मिनिट हो गए थे। उसके बाद न सामायिक का और न माला फेरने का ही वह क्रम रहा किन्तु मैं ऐसा मानता हूं कि मेरे लेखन में उसका भी एक भिन्न रूप आ समाया है और जीवन में कई बार ऐसे प्रसंग आये जब जैनत्व के संस्कारों ने ही मुझे अच्छा बनाये रखा।

उदयपुर में जब-जब भी मैंने महाप्रज्ञजी का व्याख्यान सुना तो मुझे लगा कि वे जैन शास्त्रों की बंधीबंधाई लीक से परे आमजन के साथ जो व्यावहारिक घटनाएं घटती हैं उन्हीं को अपना विषय बनाकर समस्या का निदान देते हैं और खुशहाल जीवन जीने की नीव बांधते हैं। कोई घटना, कोई संस्मरण, कोई आख्यान, कोई समाचार, कोई समस्या, कोई आदर्शपरक दृष्टांत सुनाकर वे अपना वक्तव्य प्रारंभ करते हैं और कई उदाहरणों, उद्धरणों, महापुरूषों के जीवनानुभवों तथा अपने निजी चिंतन से जो निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं वे सभी के लिए अमृत तुल्य होते हैं। इसीलिए उनकी धर्मसभा में हर जगह, हर समय मैंने सभी जाति के बड़े से बड़े तपके से लेकर छोटे कहे जाने वाले तपके के लोगों को देखा है। निश्चय ही उनके सान्निध्य एवं सम्पर्क से कइयों का जीवन बदला है। सोच और समझ बदली है। मन बदला है। कइयों ने सात्विक जीवन जीने की राह पकड़ी है और उन सारे मार्गों को छोड़ा है जो कड़वाहट भरे, अठीक कहे जाने वाले तथा बड़ी कमाई के जरिया थे किन्तु वे दुखद परिणति के ही थे।

महाप्रज्ञ विहार में उनके चातुर्मास काल में जब-जब भी कोई विशिष्ट आयोजन हुआ, मैंने आचार्य महाप्रज्ञजी को सुना ही नहीं, उनके मूल्यवान विचारों को डायरीबद्ध भी किया। इस दौरान उन्होंने साहित्य, संस्कृति, भाषा, शिक्षा आदि पर सारगर्भित कहा। डायरी का कुछ मूल्यवान पठनीय छुटपुट अंश प्रस्तुत है-

-'सैंकड़ों-हजारों वर्षों का चिंतन पल्लवित होता है तब कहीं संस्कृति बनती है। यह भाव और भाषा की समन्वित शृंखला है।'

-'हमारी समझ से समाज का निर्माण होता है।'

-'जीवन स्वांस से निर्मित होता है।'

-'स्वांस से भाषा चलती है।'

-'भाषा है तो समाज है, संस्कृति है। आचार्य तुलसी का भाषा, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में जो अवदान रहा वह बड़ा मूल्यवान है।'

-'प्राकृत अपभ्रंश के बिना राजस्थानी नहीं।'

-'भाषा आचार-विचार-व्यवहार और संस्कार की संजीवनी है।'

-'पशुओं में कभी घेराव, हड़ताल, याचिका नहीं होती कारण कि उनके पास भाषा नहीं है। भाषा के बिना संपर्क नहीं बनता।'

- 'मन और भाषा का संबंध बड़ा गहरा है। मन का काम भाषा से ही चलता है।'

-'हर क्षेत्र में समान भागीदारी की आवश्यकता है। पुरूषों की तुलना में महिलाओं की क्षमता का विकास करना है।'

-' हर छात्र के लिए निशुल्क शिक्षा हो।'

-'महिला का सशक्त होना अनिवार्य है। प्रत्येक महिला के लिए सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता जरूरी है।'

कहना नहीं होगा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने तेरापंथ धर्म संघ की परम्परा को पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया और संघ को मर्यादित, संगठित, अनुशासित एवं संयमित बनाए रखा। वे आचार्य तुलसी के सबसे नजदीक वैचारिक मनोरथ के सम्पोषक थे। उनका कोई व्याख्यान, कोई दिन ऐसा नहीं होता जब वे आचार्य तुलसी की स्तुतिपरक अभ्यर्थना में उनकी देन का उल्लेख नहीं करते। उन्होंने प्रेक्षाध्यान तथा अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से भारतीय धर्म, अध्यात्म एवं दर्शन की मनोभूमि को संरक्षित करते हुए भगवान महावीर के संदेश को वैज्ञानिक मंथन दिया। उनकी संयत वाणी, संयमी जीवन तथा सदाचारी परिवेश ने पूरे विश्व को शांति एवं भाईचारे का संदेश दिया। महावीर ने अपने युग में जिन मानवमूल्यों को लेकर जन-जन को जो संदेश दिया था, वही संदेश और वही वाणी मैंने आचार्य महाप्रज्ञ में मूर्तिवंत होते पाई।

आचार्य महाप्रज्ञ के बाद युवाचार्य महाश्रमण आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। तेरापंथ धर्मसंघ को अधिक प्रभावी तथा यशस्वी बनाने के लिए आचार्य तुलसी की तरह आचार्य महाश्रमण ने भी धर्मक्रांतिपरक दो नये पद सृजित किये। एक 'साध्वीवर्या' का और दूसरा 'मुख्य मुनि' का। दोनों पदों पर क्रमश: साध्वी संबुद्धयशा एवं मुनि महावीरकुमार को पदासीन किया गया।

असम के नगुरा में 2 जून 2016 को विशाल धर्मसभा में साध्वी सुंबुद्धयशा को साध्वीवर्या पद पर प्रतिष्ठित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने परिपत्र में लिखा-''मैं शिष्या संबुद्धयशा को साध्वीवर्या पद पर प्रतिष्ठित करता हूं। सुंबुद्धयशा आचार्यप्रवर के उपपात में आचार्यप्रवर के इंगितानुसार वाचनाग्रहण, अनुलेखन आदि रूप साहित्यिक कार्य यथौचित्य यथासंभव करती रहे तथा आचार्यप्रवर के इंगितानुसार वे यथोचित्य आचार्यप्रवर के प्रबन्धन-प्रशासन कार्य में भी आचार्यप्रवर का सहयोग करती रहे।''

इसके दो दिन बाद ही 4 जून 2016 को असम के बरपथार में मुनि महावीरकुमार को मुख्य मुनि पद पर आसीन कर परिपत्र में लिखा- ''मैं शिष्य मुनि महावीरकुमार को मुख्य मुनि पद पर प्रतिष्ठित करता हूं। अनुशासन संहिता में उल्लिखित मुख्य नियोजक की व्यवस्था मुख्य मुनि के लिए लागू की जा रही है। विशेष परिस्थितियों में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के संचालन का संपूर्ण दायित्व मुख्य मुनि ग्रहण कर सकेंगे। विशेष परिस्थितियों के निर्णायक स्वयं आचार्य महाश्रमण होंगे। यदि आचार्य महाश्रमण उसके निर्णायक नहीं बन सकेंगे तो स्वयं मुख्य मुनि, जिसे परिस्थिति निर्णीत करदे उसे धर्मसंघ की विशेष परिस्थिति मानले, वह विशेष परिस्थिति स्थापित हो जाए।''

इस प्रसंग पर आचार्य महाश्रमण ने कहा- ''मैं अपने में 100 प्रतिशत कर्जा महसूस करता था, अब 90 प्रतिशत हल्का हो गया हूं।''

कहना नहीं होगा कि तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्यश्री तुलसी ने अपने समय में जो कदम उठाये और परम्परा की लीक से हटकर आवश्यकतानुसार जो परिवर्तन किये उसी के कारण इस संघ की पूरे विश्व में विशिष्ट पहचान बनी। आचार्य महाश्रमण का भी उसी आधारभूमि का यह क्रांतधर्मी सुदृढ़ संकल्पित अग्रगामी कदम है।

परिवार नियोजन पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

उदयपुर। यूनएफपीए और आईआईएचएमआर द्वारा परिवार नियोजन एवं प्रजनन स्वास्थ्य कमोडिटी सुरक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आईआईएचएमआर जयपुर में शुरू हुआ।

डीन प्रो. पीआर सोढानी ने बताया कि इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य प्रोग्राम मैनेजमेंट, नियंत्रण, परिवार नियोजन एवं प्रजनन स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रबन्धन के कौशल के बारे में बेहतर समझ प्रदान करना है, साथ ही प्रभावी हिमायत नेटवर्किंग एवं रणनीतिगत सोच विकसित करना है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में सात देशों के 25 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं इन देशों में अफगानिस्तान, बांगलादेश, भूटान, लायोपीडीआर, मलेशिया, म्यांमार और टिमोरलिस्टे शामिल हैं। प्रेसिडेंट प्रो. विवेक भंडारी ने कहा कि आईआईएचएमआर अपने ज्ञान प्रबन्ध के आधार पर यूएनएफपीए के साथ मिलकर परिवार नियोजन तथा प्रजनन स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए निकटतम रहकर कार्यरत है।

इण्डोनेशिया के डॉ. एन्रेटसेश रोबर्सटन ने कहा कि यह एकमात्र कार्यक्रम है जो वैश्विक स्तर पर समग्र रूप एवं एकीकृत रूप से उपलब्ध है तथा परिवार नियोजन की सोच के अधिकार के परिदृश्य पर आधारित है। सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों में पेशेवरों के कौशल निर्माण की महती आवश्यकता है ताकि परिवार नियोजन एवं प्रजनन स्वास्थ्य कार्यक्रम को महिलाओं के अधिकार परिप्रेक्ष्य में प्रबन्धित तरीके से संचालित किया जा सके। आईआईएचएमआर और यूएनएफपीए के संयुक्त प्रयासों से इस कार्यक्रम को तैयार किया जा रहा है।

वी-मार्ट पर 'फैशन उत्सव'

उदयपुर। वी-मार्ट ने दीवाली पर ग्राहकों के लिए 'फैशन उत्सव' शुरू किया है जिसके तहत बम्पर और साप्ताहिक लकी ड्रा में 1 करोड़ रुपये तक के उपहार जीतने का मौका मिलेगा। उपहार में कार, बाइक, एलईडी, फ्रिज, स्मार्टफोन, इंडक्शन प्लेट, डिनर सेट, सोने के सिक्के शामिल है। वी-मार्ट रिटेल लि. के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विपणन स्नेहल शाह, ने कहा कि हमारे विशेष ऑफर 'फैशन उत्सव' में ग्राहकों को 1 करोड़ के उपहार जीतने का मौका मिलेगा। इस ऑफर का लाभ उठाने के लिए, ग्राहक को स्टोर में कम से कम 395 रुपये की खरीदारी करने पर दीवाली लक्की ड्रा में भाग लेने का मौका मिलेगा जिसमें वह कार, बाइक, फ्रिज, एलईडी, स्मार्टफोन, इंडक्शन प्लेट्स, डिनर सेट और सोने के सिक्के जीतने का अवसर पा सकते हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।